महापाठ २०१०- सारे देश में गूंजा जय हनुमान

हनुमान चालीसा के इस महापाठ में गतवर्ष की भांति इस वर्ष भी सवा करोड़ हनुमानभक्तों द्वारा पाठ किये जाने का लक्ष्य रखा गया था। इसके लिए पिछले तीन माहों से व्यापक स्तर पर तैयारियां देश-विदेश में की जा रही थीं। देश के विभिन्न गांवों, कस्बों तथा शहरों में महापाठ का आयोजन २४ मार्च को सायं ७ से ८ बजे तक रखा गया था। भारत के अलावा १६ अन्य देशों में यह कार्यक्रम निर्धारित समय पर हुआ।

रायपुर। रामनवमी के मौके पर देशभर में सवा करोड़ हनुमान भक्तों ने एक साथ हनुमान चालीसा का पाठ किया। जीवन प्रबंधन गुरु पं. विजयशंकर मेहता की प्रेरणा से हुए इस महापाठ में भारत के अलावा 16 अन्य देशों के श्रद्धालुओं ने भी हिस्सा लिया। रायपुर में बूढ़ापारा स्थित स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स में जीवन प्रबंधन समूह उज्जैन एवं श्रीहनुमान महापाठ समिति रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुए मुख्य आयोजन में हजारों श्रद्धालुओं चालीसा के दोहे और चौपाई सुनाकर झूम उठे। पूरा शहर हमारे हनुमान के जयकारे से गूंज उठा। यह हनुमानचालीसा के महापाठ का द्वितीय अनुष्ठान था जो योगी हनुमान पर केंद्रित था। पिछले वर्ष भी यह अनुष्ठान रामनवमी के ही दिन 3 अप्रैल को आयोजित हुआ था।

स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स के अलावा लोगों ने घर में बैठकर कई चैनलों पर इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखा। हजारों लोगों और शहर में लोगों ने हनुमान चालीसा का पाठ किया। खचाखच भरे हुए मैदान में जैसे चालीसा के दोहों और चौपाइयों के स्वर गूंजे, श्रद्धालुओं ने ताली बजाकर पाठ शुरू कर दिया। तकरीबन सात मिनट में पाठ पूरा हुआ। इस दौरान श्रद्धालु पूरी तरह मग्न हो उठे। हनुमानजी की भक्ति में लीन लोगों ने जयकारे लगाए तो सर्वत्र हमारे हनुमान-जय हनुमान गूंज उठा। इस मौके पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमनसिंह, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री बृजमोहन अग्रवाल, स्वामी दांडी महाराज, महंत रामसुंदरदास सहित संत समाज भीमौजूद था। साथ ही विधायक कुलदीप जुनेजा, महापौर किरणमयी नायक, सभापति संजय श्रीवास्तव, भाजपा नेता सच्चिदानंद उपासने, हनुमान महापाठ समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश गोयल, संयोजक शिवनारायण मूंदड़ा, चतुर्भुज अग्रवाल, हनुमान प्रसाद अग्रवाल, मोहन पवार, राजेश अग्रवाल, सरिता अग्रवाल, रामदुलारे अग्रवाल, प्रभा दुबे, नीतू मूंदड़ा, रमाकांत मिश्रा सहित अन्य अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

अनुष्ठान के पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार काम्प्लेक्स में सायं 6 से 7 बजे तक भजन संध्या का आयोजन हुआ, जिसमें भगवान श्रीराम व भक्त श्रीयोगी हनुमान पर आधारित भजनों का कुशल भजन गायकों द्वारा गायन हुआ। श्रद्धालुगण आनंदपूर्वक भजन गुनगुनाते व धुन पर झूमते देखे गये। संगीतय भजन संध्या के बाद ठीक सात बजे लगभग सात मिनट में हनुमान चालीसा का महापाठ हुआ। इस अनुष्ठान के प्रेरमास्त्रोत, प्रख्यात जीवन प्रबंधन गुरु व हनुमानभक्त पं. विजयशंकर मेहता के साथ स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स में बैठे 30 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने महापाठ किया। व्याख्यान के पश्चात पं. मेहता ने अपनी सुमधुर वाणी में हनुमानचालीसा पर लगभग 30 मिनट का सारगर्भित तथा मौलिक व्याख्यान दिया।

नागर समाज भोपाल

तब और अब

भोपाल। शैल शिखर, ताल-तलैया की सुरम्य नगरी भोपाल अपनी पूर्ण गरिमा के साथ म.प्र. की राजधानी होने का गौरव हासिल किए हुए है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक महत्वपूर्ण संकायों से सुसज्जित शिक्षा और सांस्कृतिक गरिमा से प्रतिष्ठित है।

इस नगर का एक दौर ऐसा भी था जब गरीबी, मुफलिसी, गंदगी और गई गुजरी जिंदगी यहां पसरी हुई थी। नवाबशाह से प्रजातंत्र के पहरेदारों ने अपनी कुर्बानी देकर गुलामी से मुक्त कराकर आजादी का मंजर दिखाया। तब और अब भोपाल की काया में इतना परिवर्तन आया है कि बड़े अंतराल के बाद यहां आने वाला अपना ठिकाना आसानी से खोज नहीं पाता। मुझे याद है कि सर्वप्रथम पहले 'नागर' प्रवीणकांत वैद्य शिक्षा विभाग में एक अधिकारी के रूप में प्रतिष्ठित हुए थे। डॉ. विष्णुदत्त नागर दूसरे व्यक्ति थे, जो प्रोफेसर के रूप में यहां आए। फिर तो अनेक नागर बंधु शासकीय नौकरी या राजनीति से संबंद्ध होकर यहां आए। जैसे ही म.प्र. गठन का दौर शुरू हुआ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में पं. राधेलाल व्यास ने भोपाल में स्थाई निवास बनाकर नागरों को स्थाई रूप से बसने का आगाज किया। स्वतंत्रता संग्राम सैनानी सर्वश्री नंदलालजी व्यास, किशोर भाई, एल.ओ. जोशी और अनेक नामधारी कर्मठ नागर भोपाल में अपनी प्रतिभा को उजागर करने लगे। डॉ. वी.डी. मेहता, व्ही.एस. मेहता, बद्रीनारायण मेहता, विभिन्न सेवाओं में आए और उल्लेखनीय तथ्य यह कि नागर ब्राह्मण परिषद इन सबके प्रयासों से अस्तित्व में आई। 1960 के दशक में माननीय एल.ओ. जोशी सा. की प्रेरणा से सभी नागर बंधु बारी-बारी से एक-दूसरे के घरों पर बैठक आयोजति करते थे। मधुर वातावरण, अपनत्व के साथ विचार मंथन, स्वल्पाहार कर एक-दूसरे के सुख-दुख की खैर-खबर रखते थे। बाद में सभी नागरजनों की अभिलाषा अनुरूप परिषद का विधिवत गठन हुआ। इस परिषद को अ.भा. नागर परिषद अहमदाबाद से संबद्ध किया गया। भोपाल से डॉ. वल्लभदासजी मेहता केंद्रीय परिषद के स्थाई सदस्य बनाए गए। परिषद की विशेषताएं भोपाल नागर परिषद ऐसी संस्था बनी जिसमें सभा व कार्यवाही की औपचारिकता मात्र नहीं थी। नागर जाति की उच्चतम सांस्कारित, धार्मिक पहचान है इस बात के मद्देनजर हमने शिवपुराण, रामायण, गीता और जैन साहित्य की सुंदरतम रचनाओं का एक संग्रह बनाया। प्रत्येक सभा और संगोष्ठी का शुभारंभ उक्त प्रार्थना, भजन और आरती से किया जाता। हमें आज गर्व है कि प्रदेश ही नहीं भारत के किसी भी नगर में ऐसी प्रार्थना सभा या गोष्ठी के प्रारंभ में नहीं गाई जाती, इस प्रार्थना की विशेषता यह है कि निरंतर एक घंटे की समयावधि तक पूर्ण सस्वर गीत सामूहिक रूप से सम्पन्न की जाती है। इस प्रार्थना के पीछे इसके संग्रहकर्ता ने यह ध्यान रखा था कि हमारी संस्कृति अनुरूप आचरण और व्यवहार में धार्मिकता, सामाजिकता का प्रसार हो और नई संतति को प्रेरणा और प्रोत्साहन प्राप्त हो।

परिषद के आरंभिक गठन के दौर में घर-घर गोष्ठी आयोजित की जाती रही, जिनमें पूरा परिवार सहभागी होता था और यह सुअवसर आपस में प्रेमभाव, सहानुभूति और सहयोग की भावना जाग्रत करता था। यह परम्परा अभी भी अक्षुण्ण रूप से जारी है। सन् 60 से 80 के बीच हाटकेश्वर जयंती या अन्य उत्सव मनाने हेतु कोई बड़ा स्थान नहीं था। समय-समय पर मंदिरों के प्रांगणों में उत्सव सम्पन्न होते रहे। इतना जरूर था कि समाज में जोश था, नवयुवकों में उत्साह और प्रोत्साहन था। प्रायः नए पुराने भोपाल के मंदिरों में उत्सव सम्पन्न होते। विशेष उल्लेखनीय घटना 90 के दशक मेंहुई जब बीएचईएल के उत्साही नवयुवकों ने विशाल पैमाने पर हाटकेश्वर जयंती मनाने का निर्णय लिया और बड़े पैमाने पर उत्सव सम्पन्न किया। नगर में जब नागरों की संख्या बढ़ी और उत्सव मनाने के लिए नए-नए ठिखाने ढूंढे जाते, तो यह बात वरिष्ठ सदस्यों को अच्छी नहीं लगी। एक दिन आदरणीय एल.ओ. जोशी सा., श्री ओमवल्लभजी नागर, डॉ. वी.डी. मेहता व अन्य प्रतिष्ठितजनों ने मुझसे बातों ही बातों में कहा कि भाई कोई तो स्थान तलाशो जहां से हमें बार-बार कहीं जाना न पड़े। उनकी प्रेरणा ने मुझे उत्साहित किया और वर्तमान में स्थित हाटकेश्वर मंदिर को मैंने अपने परिवार के सहयोग से ई3-347 अरेरा कॉलोनी भोपाल में अपने घर के सामने विशाल उद्यान में हाटकेश्वर मंदिर का निर्माण किया।

जहां आज समस्त नागर समाज श्रद्धा भक्ति के साथ अपने त्योहार उत्सव आयोजित करते हैं। विगत 30 वर्षों से यहीं पर समाजजन एकत्र होकर भगवान हाटकेश्वर की पूजन-अर्चन कर उत्सव मनाते हैं। हमारी समिति प्रतिवर्ष सावन के सभी सोमवार पर रुद्राभिषेक करती है। इसकी व्यवस्था भी अपने आप में अनूठी व अनुकरणीय है। प्रति सोमवार कोई एक

भोपाल नगर में आने जाने वाली प्रतिभाएं

- ❒ श्री भगवंतराव मंडलोई (मुख्यमंत्री)
- ❒ श्री राधेलालजी व्यास (सांसद व पूर्व मंत्री)
- ❒ श्रीमान किशोरभाई (स्वतंत्रता संग्राम सेनाना, शिक्षा सचिव)
- ❒ श्री विष्णुदत्त नागर (प्रथम प्रोफेसर)
- ❒ डॉ. वल्लभदास मेहता (प्रोफेसर)
- ❒ श्री इंद्रनारायण पौराणिक (उद्योग जगत में)
- ❒ श्री इंद्रनारायण व्यास (केंद्रीय खाद्य विभाग प्रबंधक)
- ❒ श्रीमान ओमवल्लभजी नागर (सचिव)
- ❒ श्री मंडलोई जी (सचिव)
- ❒ श्रीमती नंदा मंडलोई (विधायक)
- ❒ श्री श्रवणेश्वर झा (प्रबंधक परमालीवालेस)
- ❒ श्री ओमप्रकाश मेहता (पत्रकार)
- ❒ श्री बालकृष्ण मेहता (प्रांतीय सचिव)
- ❒ श्री बी.के. मेहता (संचालक खाद्य विभाग)
- ❒ श्री प्रशांत मेहता (प्र. सचिव)

स्मृति दोष के कारण जो नाम छूट गए हों, उनके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूं।

परिवार यजमान होता है तथा वही पूजन, स्वल्पाहार का खर्च उठाता है। 30 वर्षों में एक भी मौका ऐसा नहीं आया जब कोई यजमान न मिला हो। साथ ही प्रत्येक वर्ष हाटकेश्वर जयंती पर रुद्राभिषेक, पूजन, अर्चन आरती के साथ सहभोज अवश्य होता है। भोपाल नागर परिषद को सदैव यह गर्व रहा कि इस नगर में प्रशासनिक, राजनीतिक और सामाजिक कर्त्तव्य सम्पन्न करने के लिए बड़ी-बड़ी हस्तियां यहां आईं और अपने सदकार्यों की छाप छोड़ गई। सर्वप्रथम श्री भगवंतराव मंडलोई, जिन्होंने राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में एक सफल प्रशासक की छवि कायम की। राज्य को तो कृतार्थ किया ही नागर समाज का भी मान बढ़ाया। विशेष उल्लेखनीय घटना अंतर्गत मंडलोई परिवार से ही सम्बद्ध विधायक श्रीमती नंदा मंडलोई ने समाज बंधुओं के अनुरोधपर ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में हाटकेश्वर जयंती को ऐच्छिक अवकाश के रूप में सम्मिलित कराकर नागरों की पहचान प्रदेश में कायम की। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अफसर श्री विनोद मंडलोई के प्रयासों से समिति को जमीन आवंटन की पहल की गई। श्री ओमवल्लभजी नागर, श्री रामवल्लभजी नागर, श्री विष्णुशंकरजी मेहता सदैव नागर समाज के कार्यों में आगे बढ़कर सहयोग देते रहे। श्री एल.ओ. जोशी, श्री पी.एस. मेहता, श्री नीलकंठ बूच उनके अनुज श्री प्रशांत मेहता (सचिव) ऐसे प्रशासक रहे, जिन्होंने समाज के भाल को उन्नत किया है।

श्री बी.के. मेहता का नाम विशेष उल्लेखनीय है जो खाद्य विभाग में कार्यरत रहे तथा वर्षों समाज को नेतृत्व प्रदान किया। श्री श्रवणेश्वरजी झा व डॉ. वी.सी. मेहता ने समिति की कुछ वर्षों तक अध्यक्षता की और अनेक सोपान हासिल किए। लगभग 15 वर्षों से मुझे सेवा का अवसर अध्यक्ष के रूप में दिया और मैंने हरसंभव प्रयास कर समाज को ऊंचाइयाँ प्रदान की। भोपाल का नागर इतिहास इतना विषद है कि किन-किन का नाम लूं किनका छोड़ूं बहुत मुश्किल है। श्री ओमप्रकाशजी मेहता ने पत्रकारिता के क्षेत्र में जो गौरवमयी उतिहास बनाया तथा समाज को गौरवान्वित किया यह सर्वविदित है। मालवा संत पं. श्री कमलकिशोरजी नागर के काका श्री हरिवल्लभ नागर और दुर्गाशंकर नागर भी भोपाल में रहे हैं। समाज के नाम पर बहुत कुछ कहने करने को है, परंतु अभी बस इतना ही। इति।.

बालकृष्ण मेहता
अध्यक्ष
म.प्र. नागर परिषद शाखा भोपाल

नागर समाज के गौरव

नागर महाकुंभ के संयोजक

वरिष्ठ पत्रकार

श्री ओमप्रकाश मेहता

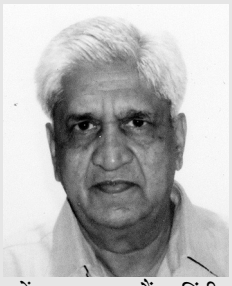

भोपाल नागर समाज एवं जय हाटकेशवाणी के तत्वावधान में आयोजित नागर महाकुंभ के संयोजक श्री ओमप्रकाशजी मेहता का समग्र परिचय देना न केवल प्रासंगिक है, बल्कि अत्यावश्यक भी है. राजधानी में वरिष्ठ पत्रकार के रूप में उनकी पहचान है, साथ ही उतना ही मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा भी है। नागर महाकुंभ आयोजित कराने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

श्री विश्वनाथजी मेहता के सुपुत्र श्री ओमप्रकाश मेहता का जन्म 29 जनवरी 1943 को हुआ तथा एम.ए. अर्थशास्त्र, साहित्य रत्न की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात आपने पत्रकारिता का क्षेत्र चुना, अवंतिका, नवभारत उज्जैन (सात वर्ष), नई दुनिया इंदौर (उज्जैन-इंदौर) 16 वर्ष, यूएनआई (वार्ता) (भोपाल व उज्जैन में) तीन वर्ष, दैनिक भास्कर भोपाल 3 वर्ष, दैनिक हिंदुस्तान दिल्ली 14 वर्ष, दैनिक न्यूज एक्सप्रेस, नवभारत भोपाल, राष्ट्रीय हिंदी मेल में कार्यानुभव के साथ वर्तमान में दैनिक नईदुनिया भोपाल में सम्पादक हैं। हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत भाषा के ज्ञाता श्री मेहता की दो पुस्तकें भारत के पर्यटन स्थल (1986) तथा सत्ता की चौसर, खिलाड़ियों का दांव (2004) प्रकाशित हुई। भारतीय पुरातत्व पर 500 आलेखों का विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन हुआ है। भोपाल में वरिष्ठ पत्रकार के रूप में उनकी धाक है तथा राजनीतिक, प्रशासनिक हलकों में विशेष सम्मान उन्हें प्राप्त है। राजधानी में आयोजित नागर महाकुंभ में उनका विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। समाज के सामूहिक लाभ में उनकी विशेष रुचि इस मकसद से दृष्टिकोचर होती है कि वे भोपाल में नागरों के लिए विश्राम भवन या धर्मशाला निर्माण कराना चाहते हैं। महाकुंभ में उनके द्वारा किए गए विशेष सहयोग के लिए जय हाटकेशवाणी परिवार उनका हृदय से आभारी है।

संगीता शर्मा (नागर)

वंदन

वंदन उनका होता है जो
वंदनीय होते हैं
वंदन वे करते हैं जो
अनुकरणीय होते हैं
वंदन एक सभ्यता है जो
विकास का प्रभाव है
वंदन एक अनुभव है जो
प्रशस्ति बोधक है
आओ चिरस्मरणीय बनाये
वंदन को, क्योंकि
वंदन
आज की अनुभूति हैं

वृजेन्द्र नागर, इंदौर

मेरा विश्वास तुम...

कब कहा मैंने कि
आओ पास तुम।
कब कहा मैंने कि
बनो आभास तुम।
सहे जा रहा हूं अकेले ही
इस दर्द को
टूटते गये बनकर
मेरे विश्वास तुम।

सुभाष नागर 'भारती'
अकलेरा (राज.)

मालिक ने नौकर से कहा- मेरा दोस्त आ रहा है, जा स्टेशन से उसे ले आ, एक रुपया दूंगा।
नौकर- और अगर वह नहीं आया तो?
मालिक- तो दो रूपए दूंगा।

स्थानीय 'मंगल' के लिए है कलश

विगत हाटकेश्वर जयंती के अवसर पर इंदौर-उज्जैन-रतलाम में सभी नागर परिवारों को मंगल कलश का वितरण किया गया। इन कलशों में प्रतिदिन यथायोग्य राशि बचत कर समाज के आगामी कार्यक्रम में एकत्र कर लाना है। यह एकत्र राशि स्थानीय समाज के कोष में एकत्र होगी तथा इससे स्थानीय स्तर पर समाज कल्याण हेतु व्यय किया जावेगा। यह एक शुरूआत है। समाज कल्याण हेतु धन एकत्र करने की। कहा जाता है कि दान से धन की शुद्धि होती है तथा 'मंगल कलश' के प्रति समाज बंधुओं के भारी उत्साह को देखते हुए मंदसौर-नीमच क्षेत्र तथा नागर महाकुंभ के दौरान भोपाल में भी ये कलश वितरित किए जा रहे हैं। नागर गौरव पं. कमलकिशोरजी नागर की प्रेरणा के अनुरूप समाज कल्याण के लिए धन संग्रह की प्रवृत्ति जागृत करने के लिये ये कलश वितरित किए गए हैं। इनमें ज्यादा से ज्यादा धनराशि एकत्र कर स्थानीय प्रतिनिधियों को ये कलश पुनः सुपुर्द किए जाएं।

सम्पादक

आपके पत्र

सराहनीय प्रयास

महोदय,

समस्त समाज के विकास का आपका योगदान एवं विवाह योग्य युवक-युवती परिचय विशेषांक 2010 में आपकी मेहनत, जानकारी जुटाना, समाज को एक मंच पर एकत्र करना सराहनीय प्रयास है। सम्पादक मंच को मेरी शुभकामनाएं। आपके सहयोग के लिए सदैव तत्पर मैं

पं. दुर्गाशंकर नागर
नागेश्वर ज्योतिष अनुसंधान केंद्र,
उज्जैन

मुझे प्रभावित किया है...

मासिक जय हाटकेश वाणी पत्रिका राष्ट्र से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर की ओर अग्रसर है। इसमें प्रकाशित जानकारी ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया है। यह नागर समाज की प्रथम पत्रिका है, जो इंटरनेट पर पढ़ी जा सकती है। 9 मई 2010 को भोपाल में आयोजित नागर ब्राह्मण समाज के महाकुंभ के आयोजन हेतु सफलता की कामना एवं कोटिशः धन्यवाद।

डॉ. नरेन्द्रकुमार मेहता
एम 1/7 एम.बी.ए. क्वाटर्स
विक्रम विश्वविद्यालय, परिसर देवास रोड उज्जैन
94245 60115

मस्तिष्क पर छाप छोड़ते हैं

महोदय, अप्रैल माह का अंक मुझे प्राप्त हुआ। गणगौर पूजन विश्व का प्राण माँ का अस्तित्व, जीवन निर्वाह की श्रेष्ठ शैली, अधिक मास में कुछ खास, व्यंजन विधि प्रतियोगिता आदि समस्त लेख-विलेख मस्तिष्क पर छाप छोड़ते हैं।

नित्यानंद नागर
60/45 ऊंचा मंडी, इलाहाबाद (उ.प्र.)

चिकित्सा के बारे में निःशुल्क सेवा

महोदय,

मैं निवेदन करता हूं कि सम्पूर्ण म.प्र-छत्तीसगढ़ एवं भारत के किसी भी भाग में हमारे समाज के जो भी परिवार हैं वे अपनी स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में प्रत्यक्ष या पत्र व्यवहार के माध्यम से निःशुल्क परामर्श ले सकते हैं। मेरे जीवन में यदि मैं अपने समाज के लिए कुछ योगदान कर सका तो वह मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी।

डॉ. मृत्युंजय कुमार शर्मा (ठाकोर)
बीएससी, एमबीबीएस, एमडी
15, लक्ष्मीबाई कॉलोनी मिसहिल स्कूल के पास, ग्वालियर (म.प्र.)
फोन 0751-4026694
मो. 9301 950747

बधाई

महोदय, सामाजिक चेतना को जाग्रत करने में अग्रणी तथा युवाओं में सांस्कृतिक संस्कारों को पुष्पित, पल्लवित करने वाली जय हाटकेश वाणी की तृतीय वर्ष ग्रंथि पर अपनी ओर से, व्यंग्यम परिवार की आत्मीय शुभकामनाएं स्वीकारें। पत्रिका दिन ब दिन प्रगति करती हुई अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर सपनों को साकार करे- **शुभेच्छु**

गड़बड़ नागर
रमेश मेहता 'प्रतीक',उज्जैन

भक्त नरसी मेहता की नगरी में दो दिवसीय स्नेह सम्मेलन

जूनागढ़। सह सविनय निवेदन है कि समग्र देश में नागर लोग 'हाटकेश' के रूप में निवास कर रहे हैं। बड़नगर हमारे ईष्टदेवता श्री हाटकेश का प्रमुख स्थान है। भारत में निवासरत नागरजन वडनगरा, विसनगरा, प्रश्नोरा, कृष्णोरा, चित्रोडा एवं साठोद्रा नागर नाम से जाने जाते हैं।

उत्तरप्रदेश, बिहार और उडिसा में अन्य जाति के लोग भी नागर सरनेम रखते हैं। कर्नाटक राज्य में भी नागर जाति के लोग निवास करते हैं, वे बंधारा और दशोरा के नाम से जाने जाते हैं। अपने वेद-पुराण में ब्रह्मत्व को धारण करने वाले नागरों का एक संगठन 'राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान' के नाम से दिल्ली में बरसों से कार्यरत हैं। यह प्रतिष्ठान में सभी नागर ब्राह्मण हैं, मगर याचक नहीं हैं। वे सिर्फ ब्राह्मणत्व को मानते हैं।

समग्र भारत में निवास करने वाले नागर समाज में भावनात्मक एकता और एक-दूसरे को नजदीक (निकट) लाने के लिए हमने गुजरात के नरसिंह नगर जूनागढ़ में एक अखिल भारतीय नागर संगठन के स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया है। इस सम्मेलन में उपस्थित होने का आपको हार्दिक निमंत्रण देते हैं। महान भक्त कवि श्री नरसिंह मेहता जिनकी कर्मभूमि जूनागढ़ (गुजरात) है और वे समग्र विश्व में प्रसिद्ध हैं। उन्हीं का आशीर्वाद पाने के लिए हमने इस स्नेह सम्मेलन का आयोजन जूनागढ़ शहर में किया है। विशेषतः भारतीय संस्कृति की रक्षक महिलाएं हैं। और हमारे नागरीय संस्कारों को बनाए रखने में भी महिलाओं का विशेष योगदान रहा है, इसलिए नागर महिलाओं के एक राष्ट्रीय संगठन की आवश्यकता है। इस विषय पर विचार-विमर्श करने हेतु एवं इस पर ठोस निर्णय लेने के मुख्य उद्देश्य से इस महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस सम्मेलन में आपश्री की उपस्थिति से यह कार्य सम्पन्न होगा। अतः हम विशेष रूप से आपको निमंत्रित कर रहे हैं। इस विशेष अवसर पर आप अवश्य ही उपस्थित रहने की कृपा करें। आपके निवास-भोजन आदि की सुविधा पूर्ण करना हमारा सौभाग्य होगा। आपके आगमन की हमें प्रतीक्षा रहेगी। आपकी अनुकूलता के बारे में हमें उक्त पते पर जानकारी देने की कृपा करें।

सम्मेलन की तारीख

29-30 मई 2010 (शनिवार-रविवार)

सम्मेलन का समय - सुबह 10 बजे से

सम्मेलन स्थल एवं निवास व्यवस्था - श्री अक्षर मंदिर टींबावाडी (वंथली रोड) जूनागढ़ (गुजरात) पिन - 362 001

रजिस्ट्रेशन शुल्क - रु. 500/- प्रति व्यक्ति

विशेष जानकारी हेतु उक्त पते पर अथवा निम्नदर्शित फोन पर सम्पर्क करें

कु. महाश्वेता एस. वैद्य
फोन (0285)
2622027/2650250
मो. 098242-98565

मुंबई में नवचंडी यज्ञ का आयोजन

मुंबई। श्री नागर भगवती ज्ञाति मंडल मुंबई के तत्वावधान में जाति बंधुओं ने 58वां स्नेह सम्मेलन एवं श्री माताजी नवचंडी यज्ञ का आयोजन रविवार 18 अप्रैल को किया गया। श्री वरदान लोक आश्रम काजुपाडा, घोडबंदर रोड जि. ठाणे में यह आयोजन सम्पन्न हुआ, जिसमें प्रातः 10 बजे से 5 बजे तक नवचंडी यज्ञ हुआ तथा स्नेह सम्मेलन 3 बजे पश्चात सायं 6 बजे स्वरुचि भोज का आयोजन किया गया। हवन एवं पूजाविधि के मुख्य यजमान श्री गोविंदलालजी पितांबरलालजी जसवंतपुरा थे। बताय ागया कि राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से मुंबई आकर विभिन्न व्यवसाय में रत बंधुओं ने उपरोक्त संगठन बना रखा है तथा वे समस्त जाति के कल्याण हेतु समय-समय पर आयोजन करते हैं। शुभ स्थल पहुंचने के लिए सी.पी. टेंक, अंधेरी बोरीवली नाला सोपारा तथा विरार से बसों की विशेष व्यवस्था की गई थी। इंदौर से श्री पवन शर्मा भी मंडल के विशेष आग्रह पर आयोजन में सम्मिलित हुए तथा वहां एकत्र हुए समाज बंधुओं से सम्पर्क किया।

मंदिरों में दानराशि के माध्यम से मिलने वाली

सुविधा कहीं दुविधा न बन जाए...

अहमदाबाद। ब्रह्महित रक्षा समिति की चिंतन बैठक अध्यक्ष श्री नरेश राजा के निवास स्थान पर हुई। इस चिंतन बैठक की अध्यक्षता समस्त गुजरात ब्रह्म समाज के राज्यकक्षा के प्रमुख श्री महेशभाई मेहता (नडियाडवाला) ने की। चिंतन बैठक में गुजरात राज्य के कोन-कोने से ब्राह्मणजन श्री जीतूभाई मेहता (विधायक राजकोट) के नेतृत्व में उपस्थित हुए। इसमें गुजरात राज्य में जगतजननी आरासुरी माताजी अंबाजी के मंदिर से लेकर कच्छ के आसापुरी माता, मेहसाणा के बहुचराजी मंदिर, द्वारकाधीश मंदिर, सोमनाथ मंदिर, डाकोर के रणछोड़राय मंदिर एवं हाटकेश्वर मंदिर वडनगर जैसे गुजरात के तमाम पब्लिक ट्रस्ट के मंदिरों में यात्रियों को होने वाले कष्ट एवं अन्य तकलीफों के विषय में चर्चा की गई। अम्बाजी में रु. 5001 या उससे अधिक दान देने पर पूरे परिवार को गर्भगृह में सीधे दर्शन कराए जाते हैं ये चिंताजनक बात है, क्योंकि कोई भी आतंकवादी 5001 की राशि दान देकर मंदिर में बम रख सकता है तथा बाहर से रिमोट कंट्रोल से मंदिर को नुकसान पहुंचा सकता है। ऐसे ही माताजी के मंदिर शिखर पर ध्वजा चढ़ाने के लिए 501 रु. लेने का विरोध भी किया गया। ऐसे ही प्रश्नों का मंदिर के कारोबार संभालने वाले उच्चाधिकारियों के समक्ष विरोध दर्शाया गया।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के ४४३ परिवारों को संजोया

पुस्तक समीक्षा

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली नागर ब्राह्मण दिग्दर्शिका २०१०

सम्पादक

विनोदकांत नागर

प्रकाशक

श्री हाटकेश्वर नागर ब्राह्मण मंडल 1739, कूचा लट्टू शाह, दरीबा, दिल्ली-110006

श्री हाटकेश्वरनाथ नागर ब्राह्मण मंडल दिल्ली द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली नागर ब्राह्मण दिग्दर्शिका 2010 का प्रकाशन हाल ही में चैत्र शुल्क पक्ष चतुर्दशी को कुलदेवता श्री हाटकेश्वरनाथजी की जयंती के अवसर पर हुआ है।

सुंदर, सुरुचिपूर्ण साज-सज्जा एवं बहुरंगी मुख्य पृष्ठ युक्त लगभग 70 पृष्ठ की इस उपयोगी दिग्दर्शिका के प्रकाशित करने के लिए श्री हाटकेश-नाथ नागर ब्राह्मण मंडल दिल्ली के पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं। 443 महानुभावों के फोन नंबर सहित सम्पर्क सूत्र एकत्रित करना तथा उन्हें आकर्षक ढंग से संजोकर प्रस्तुत करना निश्चय ही एक कठिन कार्य है। इस दिग्दर्शिका में दिल्ली निवासी नागर ब्राह्मणों के सम्पर्क सूत्र के अतिरिक्त 6 पृष्ठों में नागर ब्राह्मण मंडल, दिल्ली का विधान देकर इस दिग्दर्शिका की उपयोगिता और बढ़ गई है। दिग्दर्शिका के सम्पादक श्री विनोदकांत नागर ने इस दिग्दर्शिका में अपने संक्षिप्त किंतु, सारगर्भित लेख 'धर्म के कामों के लिए दान एक आदर्श एवं अनुकरणीय परम्परा' सम्मिलित करके नागर समाज को अपने कर्त्तव्य के प्रति जागृत किया है। क्या ही अच्छा हो यदि नागर समाज की एक अखिल भारतीय दिग्दर्शिका तैयार करने का प्रयास किया जाये। इसके साथ ही आवश्यकता इस बात की है कि नागर संस्कृति और नागर जाति के इतिहास पर एक प्रामाणिक ग्रंथ तैयार करने की दिशा में भी प्रयास किये जायें।

विभा नागर
'अमृत प्रतिभा' 5/530 विकास नगर, लखनऊ- 226022
फोन (0522) 2769424

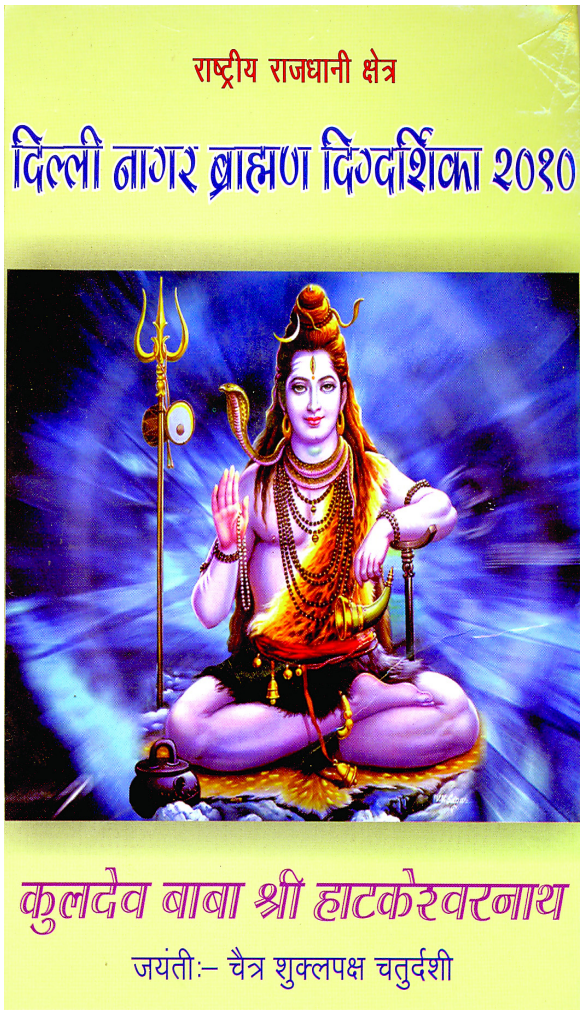

श्री अम्बालाल मेहता पुनः अध्यक्ष चुने गए

कोटा (राजस्थान)। हाटकेश्वर जयंती के अवसर पर 29 मार्च को सराय का स्थान में स्थित नागर डेरा में समाजजन एकत्रित हुए तथा भगवान हाटकेश्वर की विधि-विधान से पूजा-अर्चना, आरती की। प्रसाद वितरण के पश्चात सामूहिक भोज का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सम्पन्न निर्वाचन में अध्यक्ष श्री अम्बालाल मेहता को पुनः अध्यक्ष बनाया गया तथा कार्यकारिणी में नए सदस्य सम्मिलित किए गए।

सभी सदस्यों से वार्षिक शुल्क जमा कर भविष्य में आयोजित उत्सवों में अधिकाधिक उत्साह से हिस्सा लेने की अपील की गई। इस अवसर पर सर्वश्री प्रमोद व्यास, अजय ठाकोर, बालमुकंद ठाकोर, दीपक दवे, आर.एन. नागर, वाय.के. त्रिवेदी, सी.बी. ठाकोर, अम्बरीश मेहता, सुरेश दवे मेहता, दिनेश दवे, श्रीनाथ नागर, श्रीमती संतोष बेन नागर, श्रीमती ममता याज्ञिक आदि सदस्य उपस्थित थे। सभी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया।

प्रस्तुति- रमेशचंद्र नागर
विज्ञान नगर, कोटा

महानगर की दूरी में महिलाओं के दिलों को करीब लाती फेमिना

मुंबई। नवंबर 2009 में नागर सांस्कृतिक संस्था मुंबई की महिलाओं ने श्रीमती उषा ठाकौर के नेतृत्व में फेमिना नामक संस्था का गठन किया। स्थान के अभाव में सारे सदस्य क्रम से किसी न किसी के घर पर एकत्रित होते हैं। कार्यक्रम का आरंभ प्रार्थना से होता, इसके बाद किसी उपयोगी चर्चा के साथ-साथ विविध रंगारंग कार्यक्रम होते हैं। जिस सदस्य के घर सभा होती है वे यथाशक्ति अल्पाहार कराते हैं। अब तक हास्य की अनिवार्यता गरबा का मूल, चक्षुदान, एक्यूप्रेशर, योगासन, लांड्रीवाश, हमारे सांस्कृतिक प्रतीक, प्रसन्न रहने के नुस्खे आदि विभिन्न विषयों पर चर्चा-परिचर्चा हुई है। हाउजी व अन्य घरेलू खेलों के साथ-साथ अवसर के अनुसार गीत-संगीत सबको आनंदित करते रहे हैं। मुंबई महानगरी की व्यस्तता और उससे भी कहीं अधिक घरों की लंबी दूरियों के बाद भी सभी सदस्यों के सहयोग से फेमिना ने, एक वर्ष का कार्यकाल पूरा कर दूसरे वर्ष में प्रवेश कर लिया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह सिलसिला चलता रहे।

प्रस्तुति- सौ. मंजुला विजय जोशी, मुंबई

लोकेन्द्र शर्मा भोपाल से कोटा प्रस्थित

कोटा। माकड़ोन निवासी डॉ. गौरीशंकर शर्मा के सुपुत्र श्री लोकेन्द्र शर्मा ने कोटा मैं दैनिक भास्कर में सीनियर सब एडिटर का पद ग्रहण कर लिया है। इससे पहले लोकेन्द्र भोपाल में राज एक्सप्रेस में कार्यरत थे। ज्ञातव्य है कि 2009 में विक्रम विश्वविद्यालय की मास कम्युनिकेशन परीक्षा में श्री लोकेन्द्र ने प्राविण्य सूची में स्थान प्राप्त किया था। **मो.** 09785353030

झाबुआ में हुआ नानीबाई का मायरा

झाबुआ। आजाद चौक पर सनातन सत्संग समिति के अध्यक्ष श्री यशवंत भंडारी के मार्गदर्शन में भक्तराज नरसी मेहता के जीवन पर आधारित पांच दिवसीय भक्त और भगवान की अमरकथा के आयोजन में हजारों श्रद्धालुओं ने धर्मलाभ लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ शोभायात्रा के साथ हुआ तथा. पं. मुरारीजी की मधुरवाणी में कथा श्रवण करने बड़ी संख्या में भक्त पहुंचे। अपार जनसमुदाय के समक्ष भगवान कृष्ण, राधा और रुक्मणि के प्रतिरूप मायरे का जीवंत चित्रण किया गया। आयोजन समिति ने कृष्ण, राधा और रुक्मणि के स्वरूप में आए हुए सभी बच्चों को उपहार दिये। आयोजन समिति के सदस्यों सर्वश्री राजेश नागर, यशवंत भंडारी, नीरज राठौर, राकेश त्रिवेदी आदि का शाल-श्रीफल से स्वागत किया गया।

मैं धन्य हुआ....

श्रद्धानवत भक्त श्री सुजानमल छाजेड़ (जैन) ने उपरोक्त कथा के संबंध में अपने अनुभव बताते हुए कहा कि मेरा निवास आजाद चौक में ही है,जहां हमेशा धार्मिक आयोजन होते हैं। जीवन में दूसरी बार यह कथा सुनने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसमें आनंद की प्राप्ति हुई। पं. अनिरुद्धजी मुरारी ने अपने कोकिल कंठी स्वर में शुद्ध मालवी सरल भाषा में अपने प्राविण्य वाद्य साथियों के सहयोग से उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री राजेश नागर का मैं आभारी हूं, जिन्होंने लगातार दूसरी बार यह अद्‌भुत अवसर मुझे उपलब्ध कराया।

प्रस्तुति श्रीमती लीना नागर
94240-64104

अनुकरणीय

सहृदयता का प्रत्यक्षदर्शी

दिनांक 18अप्रैल को नीमच से लौटते वक्त देखा कि ट्रेन में जावरा से एक परिवार के चार-पांच सदस्य सवार हुए। यह परिवार बांस पर रस्सी बांधकर करतब दिखाने वाला था। उन्होंने अपने बांस एवं रस्सी ट्रेन की खिड़की से बांध दिए। दुर्भाग्य से चलती ट्रेन में बांस की रस्सी खुल गई और वे जमीन से रगड़ खाकर तेज आवाज करने लगे। ऐसे में करतबी परिवार परेशान हो गया। कुछ रेल यात्री उन पर क्रोध भी करने लगे। तभी एक युवक उठा और उसने दूसरे सिरे की रस्सी भी खोल दी और वे बांस नीचे गिर गए तथा जोर की आवाज आना बंद हो गई। उस डिब्बे में बैठे यात्रियों ने तो राहत की सांस ली, तभी ट्रेन में बैठे एक युवक ने छोटे बच्चे को पास बुलाकर पूछा कि बांस का क्या उपयोग करते हो तो उन्होंने बताया कि हमेशा ही जगह-जगह जाकर बांस पर रस्सी बांधकर करतब दिखाते हैं तथा अपनी अजीविका चलाते हैं। वे बांस गिर जाने से बेहद दुःखी दिखाई दे रहे थे। तभी उस युवक ने बच्चों को 500 रु. देते हुए कहा कि जाओ नए बांस खरीद लेना। उस नागर युवक की इस सहृदयता से मैं गदगद हो गया।

प्रदीप मेहता
71, अहिल्या नगर, इंदौर मो. 94259 75539

भोजन प्रसाद की व्यवस्था त्रिवेदी परिवार की ओर से

इंदौर। हाटकेश्वर जयंती (29 मार्च) के अवसर पर श्री आशीष त्रिवेदी के संकल्प अनुसार नागर समाज इंदौर के स्नेहभोज की व्यवस्था की गई। ज्ञातव्य है कि विगत पांच वर्षों में भट्ट परिवार द्वारा यह व्यवस्था की जाती रही है। इस वर्ष त्रिवेदी परिवार ने उम्दा व्यवस्था की सभी समाजजनों ने उनका आभार व्यक्त किया है।

प्रदीप मेहता, इंदौर

जन्मदिवस पर शिक्षा दान

इंदौर। श्रीमती प्रमिला आशीष त्रिवेदी ने अपने जन्मदिवस (दिनांक 14 अप्रैल) को अपने संकल्प अनुसार समाज के दो बच्चों को शैक्षणिक सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य दो विद्यार्थियों को शिक्षण शुल्क पुस्तकें, कापियां, गणवेश सहित 5000 रुपए प्रदान किए तथा आगामी जुलाई शैक्षक्षिक सत्र से पूरे वर्ष की 10,000 रु. शिक्षण शुल्क प्रदान किया जाएगा। जन्मदिन मनाने का यह अनूठा प्रयोग करने पर समस्त नागर समाज की ओर से श्री आशीष त्रिवेदी परिवार को बधाई। इस आशा के साथ कि उनका अनुकरण और भी परिवार करें।

भट्ट परिवार ने ५० क्विंटल गेहूं का योगदान किया

इंदौर। आगामी 15 मई 2010 को इंदौर में आयोजित सर्वब्राह्मण सामूहिक विवाह में श्री खजराना गणेश के पुजारी पं. अशोक भट्ट एवं माताजी श्रीमती माणकबेन भट्ट ने 50 क्विंटल गेहूं दान करने की घोषणा की है। ज्ञातव्य है कि इंदौर में बड़े पैमाने पर यह सामूहिक विवाह हो रहा है, जिसमें नागर समाज के भी चार जोड़े सम्मिलित हुए हैं। विवाह समिति ने सभी समाज पदाधिकारियों से तन,मन, धन से सहयोग की अपील की थी, उसी तारतम्य में भट्ट परिवार ने यह कदम उठाया है। श्रीमती माणक बेन भट्ट का परिवार समाज कार्य में सदैव अग्रणी रहा है। पांच वर्षों तक हाटकेश्वर जयंती पर इंदौर के समग्र नागर समाजको भोजन सौजन्य के साथ ही मासिक जय हाटकेश वाणी के प्रकाशन में यह परिवार विशेष सहयोग देता रहा है।

चावल के दाने से उत्पत्ति हुई नागरों की

चालाकी, नेतृत्व शक्ति एवं संकट से मुकाबला करने की ताकत खून में ही है

पुराणों और शास्त्रों के अनुसार नागरों की उत्पत्ति स्वयंभू भगवान शिव ने की थी, लोकोक्ति के अनुसार शिवजी ने चावल के दाने में से 6 प्रकार के नागर उत्पन्न किए थे। एक वडनगरा, दो विषनगरा, तीन साठोत्रा, चार चित्तोड़ा, पांच कृशनोरा, छह प्रश्नोरा नागर। ये कथा वैशाख माहत्मय और केदार खंड में उल्लेखीत है। अजमेर के राजा विसलदेव की माता ने नागरों को छह गांव भेंट में दिए थे, जिसमें उत्तर गुजरात का वडनगर, बड़ौद जिले का साठोद गांव मुख्य हैं। राजा विसलदेव ने इस्वी सन् 1024 विशनगर शहर बसाया, कहते हैं कि हिंदुस्तान में हाटकेश दादा की स्थापना नाग लोगों ने की थी। नागर शब्द नाग पर से ही बनकर आया है। नाग में से अपभ्रंश होकर नागर कहलाए। नागर लोक बाक्ट्रीया नामक देश में से हिन्दुस्तान आये।

कुछ कश्मीर में बसे जो कश्मीरी पंडित कहलाए, बाकि के लोग सिंध प्रदेश में से निकलकर वडनगर में बसे जो अब वडनगरा नागर कहलाते हैं। एक दंत कथा के हिसाब से कुरुक्षेत्र में वर्तमान में सेफीदीन नामक गांव है। इस गांव से 6 मील दूर हाट नाम का गांव है। हाट गांव के पास पंचनंद स्थल पर भगवान श्री हाटकेश्वर का प्राचीन मंदिर है। राजा-महाराजाओं के समय में नागर कौम राज दरबार में दीवान पद पर होते थे और राज्य के कार्यभार को नागर ही देखते थे। चालाकी और नेतृत्व के गुण नागर के रग-रग में होते हैं तो दूसरी तरफ जीवन की कठिन परिस्थिति का सामना हंसते-हंसते करने की ताकत भी होती है।

प्रस्तुति-प्रदीपकुमार नागर
185/22, पांचवा रोड सातवां क्रास, देवनआचार स्ट्रीट, चामरपेट बैंगलोर, मो. 9900495321

मध्यप्रदेश नागर ब्राह्मण परिषद की प्रांतीय बैठक एवं क्षेत्रीय सम्मेलन सम्पन्न

नीमच। मध्यप्रदेश नागर ब्राह्मण समाज की प्रांतीय बैठक एवं क्षेत्रीय सम्मेलन 18 अप्रैल 2010 रविवार को किलेश्वर महादेव मंदिर परिसर पर प्रांतीय अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास की अध्यक्षता एवं भागवत मर्मज्ञ एवं प्रसिद्ध कथावाचक पंडित मिथिलेश मेहता आलोट के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

बैठक का शुभारंभ मंचासीन पदाधिकारियों द्वारा नागर ब्राह्मणों के आराध्यदेव भगवान हाटकेश को दीप प्रज्जवलित कर माल्यार्पण हुआ। स्थानीय इकाई द्वारा समस्त अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया। स्वागत भाषण संयोजक रमेश नागर नीमच द्वारा दिया गया। समाज के प्रतिष्ठित एवं क्षेत्र के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. वाय.एन. पौराणिक के असामयिक निधन पर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। गणेश वंदना युवा परिषद के प्रदेशाध्यक्ष श्री हेमंत व्यास एवं स्वागत गीत स्थानीय महिला शाखा द्वारा प्रस्तुत किया गया। बैठक में नीमच, मंदसौर, रतलाम, उज्जैन, इंदौर, शाजापुर, भोपाल, देवास, झाबुआ, आगर, नागदा, पीपलरावां, इकलेरा, बेरछा, नरसिंहगढ़, मक्सी आदि स्थानों के पदाधिकारियों ने भाग लिया एवं अपनी-अपनी शाखाओं का क्रमवार प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। बैठक को रजनीश नागर दड़ौली, महिला जिलाध्यक्ष अर्चना नागर नीमच, शिवशंकरजी प्रतापगढ़, युवा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत व्यास, पूर्व अध्यक्ष लव मेहता आदि ने भी संबोधित किया।

श्री प्रतुल मंडलोई निर्विरोध उपसपंच निर्वाचित

खंडवा। नागर समाज के श्री प्रतुल मंडलोई पिता श्री सदाशवि मंडलोई स्थानीय ग्राम पंचायत रायतलाई- विकासखंड खकनार जिला बुरहानपुर के निर्विरोध पंच एवं तत्पश्चात उपसरपंच निर्वाचित घोषित किये गये। श्री मंडलोई समाजसेवा में विगत कई वर्षों से संलग्न हैं एवं ग्राम पंचायत के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। श्री प्रतुल मंडलोई की इस उपलब्धि पर नागर समाज खंडवा एवं बुरहानपुर गौरवान्वित है एवं समाज के अध्यक्ष श्री पोत्दर, उपाध्यक्ष श्री विजय नारायण व्यास, सचिव श्री प्रेम व्यास सहित मनोज मंडलोई, दीपक जोशी, श्री योगेश मेहता, श्री अश्विनी दीक्षित, श्री राघवेन्द्र राव मंडलोई, श्री बबलू मंडलोई द्वारा बधाई प्रेषित की है एवं भविष्य में समाजसेवा एवं ग्राम विकास हेतु प्रयासरत रहने हेतु शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

जसवंतपुरा (राज.) में भव्य आयोजन २१ से २५ जून तक

जसवंतपुरा (राज)। श्री नागर ब्राह्मण चामुंडा माता मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन 21 जून से 25 जून 2010 के दरम्यान होगा। श्री चामुंडा माताजी की प्राणप्रतिष्ठा दिनांक 24 जून 2010 को निश्चित की गई है। महोत्सव समिति ने यह जानकारी देते हुए बताया कि 21 जून को हवन एवं महोत्सव का शुभारंभ 22 जून को गंगाजल, कलश एवं शोभा यात्रा (प्रातः 7 बजे) 23 जून को प्रवचन एवं भजन संध्या 24 जून को प्राण प्रतिष्ठा, फलेचुनड़ी, हवन पूर्णाहुति एवं सत्कार समारंभ तथा 25 जून को महोत्सव का समापन होगा। समारोह में सभी नागर परिवार सादर आमंत्रित हैं।

कलाश्री क्राकरी एवं प्लास्टिक हाऊस का शुभारंभ

इंदौर। पं. बसंतीलाल नागर परिवार के कला श्री क्राकरी एवं प्लास्टिक हाऊस का शुभारंभ दिनांक 22 अप्रैल 10 को ठा. विजयसिंह परिहार के करकमलों द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में ठा. घनश्यामसिंहजी परिहार एवं ठा. बलरामसिंहजी परिहार उपस्थित थे। सभी अतिथियों का स्वागत पं. श्री रामप्रसाद नागर ने किया। प्रतिष्ठान में नामी-गिरामी कंपनियों के क्राकरी एवं प्लास्टिक सामग्री उपलब्ध है। नागर समाज के बंधुओं को उचित मार्गदर्शन एवं हरसंभव रियायत प्रदान की जावेगी।

मुख्यमंत्री के निमंत्रण पर पं. नागर ने किया अनुष्ठान

उज्जैन। गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विशेष आग्रह पर नागेश्वर ज्योतिष अनुसंधान केंद्र के ज्योतिषाचार्य पं. दुर्गाशंकर नागर ने गुजरात राज्य में सुख-समृद्धि हेतु विशेष चंद्ररोहणी अनुष्ठान किया। यह अनुष्ठान अप्रैल माह में सम्पन्न हुआ।

उत्सवी माहौल में हुआ रतलाम नागर समाज का पारिवारिक मिलन समारोह

ओम त्रिवेदी, रतलाम

रतलाम। हाटकेश्वर जयंती धूमधाम से मनाने के पश्चात रतलाम नागर ब्राह्मण समाज ने 4 अप्रैल 2010 को बड़बड़ हनुमान मंदिर स्थित धर्मशाला पर पारिवारिक मिलन समारोह, विभिन्न मनोरंजक स्पर्धाएं, कार्यक्रम एवं सहभोज का आयोजन हुआ। दिनभर चले कार्यक्रम में नागरजनों ने बड़ी संख्या में सपरिवार सम्मिलित होकर सामाजिक एकता का परिचय दिया। इस अवसर पर 'जय हाटकेश वाणी' के सौजन्य से प्राप्त मंगल कलश का वितरण कर स्थानीय शाखा हेतु धन संग्रह की नागर जनों से अपील की गई।

पारिवारिक मिलन समारोह के कार्यक्रम में बड़बड़ स्थित मैदानपर नागर समाज के युवा खिलाड़ियों के मध्य क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। हाटकेश्वर एकादश एवं नरसिंह मेहता एकादश के कप्तान मिथिलेश भट्ट एवं अभिनव दवे की टीमों ने मैदान पर जोरदार प्रदर्शन करते हुए खेल को रोमांचक बनाये रखा। हाटकेश्वर एकादश टीम मैच में विजेता बनी। इस अवसर पर महिलाओं ने हाऊजी, बच्चों की श्लोक प्रतियोगिता एवं मनोरंजक खेलों का आयोजन कर पारिवारिक एवं उत्साहपूर्ण माहौल बनाये रखा। सर्वश्री संजय मेहता, प्रदीप मेहता, सतीश नागर, धर्मेन्द्र नागर आदि ने 'जय हाटकेश वाणी' के सौजन्य से प्राप्त मंगल कलश प्रत्येक परिवार को प्रदान कर अनुरोध किया कि अपने सामर्थ्य अनुसार इन कलशों में वर्षभर थोड़ा-थोड़ा धन एकत्रित करें एवं इकट्ठा हुई राशि को बाद में स्थानीय नागर ब्राह्मण शाखा को विभिन्न विकास कार्य एवं आयोजन हेतु भेंट कर दें, यह सहयोग समाज हित में सिद्ध होगा।

इस अवसर पर सर्वश्री नारायणप्रसाद मेहता, रविशंकर दवे, रामचंद्र रावल, प्रवीण मेहता, विभाष मेहता, सुशील नागर, आर.सी. भट्ट, गिरीश भट्ट, विष्णुदत्त नागर, ओम त्रिवेदी, अजय नागर (सुखेड़ा), सुश्री मंगला दवे, श्रीमती कृष्णकांता व्यास, कल्पना मेहता, बिंदु मेहता, ज्योति मेहता, पुष्पा मेहता, अमिता मेहता आदि नागरजन उपस्थित थे।

रतलाम नागर महिला समाज निर्वाचन की जम्बो सूची जारी हुई

रतलाम। गत दिनों रतलाम महिला समाज के चुनाव सर्वानुमति से सम्पन्न हुए। नागर ब्राह्मण महिलाओं को जाग्रत एवं सक्रिय करने में अग्रणी भूमिका निभाने वाली सुश्री मंगला दवे अध्यक्ष एवं श्रीमती कल्पना मेहता, श्रीमती अमिता मेहता चुनी गईं। विभिन्न गतिविधियां संचालन हेतु पांच समितियां उनके सचिव एवं सदस्यों का भी मनोनयन किया गया। पदाधिकारी, सदस्यों की सूची इस प्रकार है- **अध्यक्ष** सुश्री मंगला दवे, **उपाध्यक्ष** श्रीमती अनुराधा दवे एवं श्रीमती अलका मेहता, **सचिव** श्रीमती कल्पना मेहता एवं श्रीमती अमिता मेहता, **सहसचिव-** श्रीमती रानी दवे, श्रीमती रंचना नागर, **कोषाध्यक्ष-** श्रीमती कृष्णकांता व्यास, **संरक्षक मंडल-** श्रीमती किरण मेहता, श्रीमती स्नेहलता नागर, श्रीमती मनु मेहता, श्रीमती दुर्गाबाई मेहता, श्रीमती भगवती भट्ट, श्रीमती कृष्णा मेहता। **कार्यकारिणी-** श्रीमती प्रमीला रावल, श्रीमती रेखा नागर, श्रीमती सुनीता मेहता, श्रीमती रेखा मेहता, श्रीमती पवित्रा मेहता, श्रीमती अलका मेहता, श्रीमती कुमुद बहन, श्रीमती रुक्मणि मेहता, श्रीमती कला रावल, श्रीमती अलका रावल, **सांस्कृतिक समिति-** प्रज्ञा दीक्षित (सचिव), सदस्य श्रीमती मीनाक्षी मेहता, भारती मेहता, तृप्ति मेहता, आभा त्रिवेदी, बिंदू मेहता। **साहित्य समिति** -प्रमीला त्रिवेदी (सचिव), **सदस्य-** स्नेहलता नागर, रेखा शर्मा, अनीता नागर (काटजू नगर, श्रीमती सत्येन्द्र मेहता, **शिक्षा समिति -** पुष्पा मेहता (सचिव), सदस्य- सुरेशा नागर, अंजू रावल, श्रीमती प्रबल त्रिवेदी, नीतू धर्मेन्द्र नागर, **स्वास्थ्य समिति-** ज्योति मेहता (सचिव) सदस्य इंदु रावल, अनीता मेहता, सुमन नागर, ऋचा दवे, **मंगल कामना समिति-** लीला नागर (सचिव), सदस्य उमा मेहता, अंजु पंड्या, शशि मेहता, रेखा मेहता, उमा दुर्गाप्रसाद मेहता

प्रस्तुति- श्रीमती प्रमिला त्रिवेदी, रतलाम

रतलाम नागर परिषद के पदाधिकारियों को बधाई दी

विभाष मेहता
उपाध्यक्ष

नवनीत मेहता
कोषाध्यक्ष,

सुशील नागर
सहसचिव

गिरीश भट्ट
सहसचिव

रतलाम। गत दिनों म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद रतलाम शाखा के सर्वानुमति से हेतु चुनाव में श्री संजय मेहता के अध्यक्ष निर्वाचित होने के पश्चात मनोनीत उपाध्यक्ष श्री विभाष मेहता, सहसचिवद्वय श्री सुशील नागर, श्री गिरीश भट्ट, कोषाध्यक्ष श्री नवनीत मेहता सहित कार्यकारिणी सदस्यों को अनेक समाजजनों ने बधाई प्रेषित की। पदाधिकारियों को प्रमुख रूप से सर्वश्री हेमकांत दवे, रामचंद्र रावल, अक्षय मेहता, चंद्रकांत मेहता, एम.डी. पंडित, योगेश नागर, राजेन्द्र रावल, प्रकाश रावल आदि ने बधाई दी।

प्रेषक ओम त्रिवेदी, रतलाम

हर मर्द की जिंदगी में दो मौके आते हैं जब वह औरत को समझ नहीं पाता। कब ? शादी से पहले और शादी के बाद।

महिला मंडल की बैठक में फालुदा आईस्क्रीम का प्रशिक्षण

इंदौर। नागर महिला मंडल की बैठक अध्यक्ष श्रीमती उषा दवे के निवास स्थान पर सम्पन्न हुई, जिसमें श्रीमती ममता दिलीप मेहता ने फालुदा आईस्क्रीम बनाने का प्रशिक्षण दिया। साथ ही गर्मी के मौसम में त्वचा की सुरक्षा के उपाय बताए। इस अवसर पर बड़ी संख्या में महिला सदस्य उपस्थित रहीं। श्रीमती उषा दवे तथा सचिव श्रीमती मीना त्रिवेदी ने सभी उपस्थित महिलाओं का स्वागत किया तथा नवरात्रि उत्सव हेतु सहयोग राशि एकत्र करने हेतु गुल्लक भेंट की गई।

इस अवसर पर अभा नागर परिषद शाखा इंदौर की बैठक भी सम्पन्न हुई, जिसमें अध्यक्ष श्री प्रवीण त्रिवेदी एवं सचिव श्री केदार रावल ने सभी नागर बंधुओं से दस वर्षीय शुल्क 251/- रु. प्रति सदस्य जमा कराने की अपील की। बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों ने कोषाध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम जोशी के पास शुल्क जमा करके अपनी रसीदें प्राप्त कर ली। सचिव श्री केदार रावल ने सर्वब्राह्मण समाज द्वारा मई में आयोजित सामूहिक विवाह के बारे में जानकारी देते हुए आग्रह किया कि चूंकि हमारे समाज के चार जोड़े भी उपरोक्त समारोह में सम्मिलित हो रहे हैं। अतः हमारे समाज द्वारा भी आर्थिक सहयोग किया जाना चाहिए। सुस्वादु नाश्ता एवं महिला मंडल द्वारा प्रशिक्षण के दौरान बनाई गई फालुदा आईस्क्रीम का सभी सदस्यों ने लाभ लिया।

अष्टाक्षर महामंत्र संकीर्तन एवं श्री गोवर्धननाथजी का जागरण निकालकर मनाई गई प्रथम पुण्य तिथि

उज्जैन। स्वर्गीय श्रीमती दुर्गादेवी नागर पति पं. वैद्य रामनारायण नागर मोडी (सुसनेर) की प्रथम पुण्यतिथि, तिथि अनुसार मनाई गई। रात्रि को वैष्णव सम्प्रदायजन एवं परिवार द्वारा अष्टाक्षर महामंत्र ' श्री कृष्ण शरणं ममः' का संकीर्तन कर भजन संध्या का आयोजन किया गया। श्रीमती नागर पुरे गांव, समाज, परिवार की चहेती महिला थी। उनके मृदुल समव्यवहार, अतिथि आवभगत एवं आशीर्वाद देने के स्वभाव को यादकर सराहा गया एवं उन्हें अश्रुपुरित श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्रद्धान्वत - पं. वैद्य रामनारायण नागर (बाबूजी) सीताराम मोड़ी (सुसनेर), सौ. पवित्रा-देवीप्रसाद नागर ब्यावरा (राजगढ़), सौ. सुधा-डॉ. गिरीश नागर जिला आयुर्वेद अधिकारी शाजापुर, सौ. शशि नरेन्द्र नागर एडव्होकेट उज्जैन एवं समस्त नागर परिवार मोड़ी सुसनेर जिला शाजापुर (म.प्र.)

पं. मिथिलेश मेहता के प्रवचन

पिपलियामंडी। भागवत प्रवक्ता पं. मिथिलेश मेहता के प्रवचन स्थानीय माध्यमिक विद्यालय परिसर में 28 अप्रैल से 5 मई तक आयोजित हुए। गांव लसूडिया राठौर में हुए इस आयोजन में आसपास के क्षेत्रों के हजारों ग्रामीणजनों ने एकत्र होकर धर्मलाभ लिया।

घोषणा की राशि ११हजार प्रदान की

इंदौर। हाटकेश्वर जयंती को आयोजित समाज की साधारणसभा में श्रीमती अरुणा बृजगोपालजी मेहता ने शिवांजलि ट्रस्ट हेतु घोषित दान राशि 11000 रु. प्रदान कर दिए गए हैं। उनके सहयोग के प्रति आभार।

सुयश

नागर समाज के गौरव
डॉ. संजय नागर लंदन आमंत्रित

ख्यात अर्थशास्त्री डॉ. विष्णुदत्त नागर के सुपुत्र डॉ. संजय नागर विभागाध्यक्ष बायोटेक्नालाजी आईपीएस एकेडमी इंदौर को केंब्रीज विश्वविद्यालय लंदन में 2-5 अगस्त 2010 तक आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमीनार में अपने शोधपत्र वाचन के लिए आमंत्रित किया गया है। इसके अलावा क्यूबा में आयोजित नवीं इंटरनेशनल सायमोपसियम ऑन प्लांट बायोटेक्नोलाजी में भी आमंत्रित किया गया है। इस संगोष्ठी में वे अपना शोधपत्र प्रस्तुत करेंगे। डॉ. संजय नागर को अंतराराष्ट्रीय शोध पत्रिका इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंटरडिसीपिलीनरी साइंस का सहायक संपादक भी नियुक्त किया है। डॉ. संजय नागर पहले भी कई राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय कन्वेंशन में शोध प्रस्तुत कर चुके हैं। इन उपलिब्धयों एवं वरिष्ठता को देखते हुए देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर ने बायोटेक्नोलाजी बोर्ड आफ स्टडीज का सदस्य नियुक्त किया है। इनकी उपलब्धियों पर आईपीएस एकेडमी के प्रेसीडेंट श्री अचल चौधरी, डायरेक्टर डॉ. जी.वी. कुलकर्णी एवं मध्यप्रदेश नागर ब्राह्मण परिषद के अध्यक्ष वीरेन्द्र व्यास तथा दैनिक अवंतिका इंदौर के संपादक दीपक शर्मा ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं।

प्रस्तुति –पवन शर्मा, इंदौर

कु. श्रेया मिश्रा का कैम्पस चयन

उज्जैन। कु. श्रेया मिश्रा (सुपुत्री श्रीकांत-सौ. अनीता मिश्रा, सुपौत्री श्रीमती मनोरमा बालकृष्ण मिश्रा) जो उज्जैन में इंजीनियरिंग ब्रांच की अंतिम वर्ष की छात्रा है, कॉलेज में सम्पन्न हुए कैम्पस में कंपनी द्वारा चयनित हुई हैं। उनकी इस उपलब्धि पर परिवार एवं समाज गौरवान्वित हुआ है।

श्री तनय मिश्र का कैम्पस चयन

उज्जैन। श्री तनय मिश्रा (सुपुत्र श्री अनिरुद्ध सौ. अनिता मिश्र) जो वैष्णव इंजीनियरिंग के अंतिम सेमिस्टर के छात्र हैं कॉलेज में आयोजित कैम्पस चयन में इनफोसिस कंपनी द्वारा चयनित किए गए हैं। आपकी इस उपलब्धि से समाज एवं परिवार गौरवान्वित हुआ है। आप श्रीमती गायत्री देवी बालकृष्ण मेहता के नाती हैं।

कु. शचि भट्ट प्राविण्य सूची में

इंदौर। श्री खजराना गणेश मंदिर के संस्थापक एवं मुख्य पुजारी श्रीभालचंद्र भट्ट की पौत्री एवं श्री जयदेव भट्ट सौ. वर्षा भट्ट की सुपुत्री शचि ने इस वर्ष इंटरनेशनल एम्पीरियल एकेडमी में कक्षा 6 में 81.5 प्रतिशत अंक अर्जित कर प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त किया।

कु. अवनि याज्ञिक का चयन

उज्जैन। कु. अवनि याज्ञिक सुपुत्री श्री आलोक सौ रीता याज्ञिक का सन् 2009-10 में आयोजित मेरिट्स स्कालरशिप एक्जाम में चयनित हुई। आपको 2500 रु. स्कालरशिप मिली है। कु. अवनि श्री बालकृष्ण मेहता -सौ गायत्री देवी मेहता उज्जैन की नातिन हैं।

प्रस्तुति श्रीमती नीता, वाल्मिकी नागर, इंदौर

सुमित व्यास को बेस्ट चेनल मैनेजर अवार्ड

उज्जैन। लाजीटेड इंटरनेशनल आईटी कंपनी में चेनल मैनेजर के रूप में पदस्थ श्री सुमित व्यास पिता डॉ. विजयकृष्ण व्यास को दि. 4.4.10 को बैंकाक (थाईलैंड) में आयोजित वार्षिक बैठक में वर्ष 2009-10 के बेस्ट चेनल मैनेजर भारत (सेल्स) के अवार्ड से नवाजा गया। अखिल भारतीय नागर परिषद के सदस्य श्री सुमित व्यास को इस उपलब्धि के लिए अध्यक्ष श्री प्रवीण त्रिवेदी, सचिव श्री केदार रावल, श्री ब्रजेन्द्र नागर, श्री आशीष त्रिवेदी, श्री रामकृष्ण व्यास उज्जैन, श्री एच.के. व्यास व डॉ. विजय व्यास (मक्सी) ने बधाई दी।

मो. 9826330711, 94250 83345

प्रस्तुति ब्रजेन्द्र नागर, इंदौर

चि. शिवेश कक्षा में द्वितीय

उज्जैन। चि. शिवेश (सुपुत्र मुकेश-मनीषा शर्मा) ने क्रिस्ट ज्योति कान्वेंट स्कूल में कक्षा 7वीं में 89.32 प्रतिशत अंक प्राप्त कर कक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। ज्ञातव्य है कि चि. शिवेश ने कक्षा नर्सरी से 6वीं तक प्रतिवर्ष 98 प्रतिशत अंक प्राप्त कर म.प्र. प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति से इस वर्ष गोल्ड मेडल प्राप्त किया है। चि. शिवेश अर्थ शास्त्री डॉ. रामरतन सौ सुमित्रा शर्मा का पोता है। मो. 98267 23870

कु. रशिका को सर्वोच्च अंक

नई दिल्ली। कु. रशिका (सुपुत्री संध्या-संजय नागर) ने प्रेसीडेंशियल कान्वेंट सीनियर सेकंडरी स्कूल में सेकंडरी स्कूल परीक्षा में 94.4 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। समस्त नागर समाज की ओर से बधाई।

प्रस्तुति संजय नागर
सी-98 केवलकुंज अपार्टमेंट सेक्टर 13, रोहिणी दिल्ली

चि. मौलेश नागर कक्षा में प्रथम

उज्जैन। चि. मौलेश सुपुत्र डॉ. धर्मेश सौ. कविता नागर, सुपौत्र श्री यशवंत नीरू नागर ने क्राउन पब्लिक स्कूल से कक्षा 3री की परीक्षा में 97.66 प्रतिशत अंक प्राप्त किए तथा सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त करते हुए कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। **0734-2533151**

कु. सनाथा को सुयश

जावरा। कु. सनाथा (सुपुत्री विनोद सौ. रितु नागर) ने ज्योति कान्वेंट स्कूल में कक्षा तीसरी में 83.37 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। समस्त परिवार की शुभकामनाएं।

बधाई...

कु. आद्या मेहता को-आर्डिनेटर के पद पर नियुक्त

खंडवा। कु. आद्या मेहता (सुपुत्री भरत मेहता-सौ. नीता मेहता) बीई आनर्स (टेलीकॉम) जो एलएंडटी इन्फोटेक पूना में साफ्टवेयर इंजीयिनर के पद पर कार्यरत है। को उनकी कार्यकुशलता के प्रतिफलस्वरूप ऑन साईड को-आर्डिनेटर के पद पर नियुक्त किया गया है। खंडवा के मेहता परिवार तथा शाजापुर निवासी श्री मोहिनीकांत व्यास की नातिन की इस उपलब्धि पर परिवार एवं समाज गौरवान्वित है।

प्रस्तुति भरत मेहता उज्जैन
फोन 0734- 2514225

सदैव कक्षा में प्रथम रहे शार्दुल मंडलोई

भोपाल। शार्दुल मंडलोई सुपुत्र श्री विश्वनाथ-मंजुला मंडलोई आरंभ से ही प्रतिभाशाली रहे हैं। कक्षा पहली से आठवीं तक 95 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण रहे तथा विशेष योग्यता प्राप्त की। वर्तमान में कक्षा नवीं में केंद्रीय विद्यालय भोपाल के विद्यार्थी हैं। पढ़ाई के साथ अन्य गतिविधियों क्रिकेट, माउथ आर्गन, चेस, नृत्य, नाटक, वाद-विवाद प्रतियोगिता में भी रुचि लेते हैं। उपलब्धिवान शार्दुल को दादीजी श्रीमती गीता गंगाधर मंडलोई, डॉ. एफ.बी. दुबे (नानाजी) एवं समस्त परिवार की ओर से बधाई।

कु. तारंगी जोशी को सुयश

खंडवा। सेंट पायस हायर सेकेंडरी स्कूल की कक्षा चौथी की प्रतिभावान छात्रा कु. तारंगी जोशी ने वार्षिक परीक्षा में 97.13 प्रतिशत अंक प्राप्त कर शाला में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। कु. तारंगी का इस उपलब्धि पर शाला प्राचार्य, प्रबंधन, नागर समाज के अध्यक्ष डी.डी. पोत्दार, सहित स्नेहीजनों ने बधाई दी एवं शुभकामनाएं प्रेषित की है। उल्लेखनीय है कि कु. तारंगी अध्ययन के अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं चित्रकला प्रतियोगिता में भी पुरस्कृत हो चुकी हैं।

विवाह की ५०वीं वर्षगांठ

पर हार्दिक शुभकामनाएं
श्री बालकृष्णजी सौ. लक्ष्मी नागर
19 मई 2010
शुभाकांक्षी- प्रवीण वीणा नागर (देवास), डॉ. मुकेश नीना मेहता (महू), आलोक-सीमा नागर (उज्जैन), रोहित, अंकित, प्रांजल, प्रियल।

कु. तिथि मेहता

(सुपुत्री प्रदीप-सौ. बिंदु मेहता)
19 मई
शुभाकांक्षी - मेहता परिवार रतलाम एवं नागर परिवार पीपलरावां,
सबसे ज्यादा हेप्पी बर्थडे बुन्नू की ओर से

श्रीमती आशु-सचिन

10 मई

सचिन नागर
सुपुत्र मणीशंकर नागर
22 मई
विवाह वर्षगांठ
सचिन-सौ आशु नागर
शिखा-नमन नागर
(तृतीय)
श्री मणीशंकर-सौ. संतोष नागर
१९ मई (सत्ताइसवीं)
हाटपीपल्या जिला देवास

लखनऊ **श्रीमती शशि नागर (बेबी)** के सुपुत्र तनु राजीव नागर को द्वितीय पुत्री रत्न की प्राप्ति (देवउठनी एकादशी) पर समस्त परिवार द्वारा बधाई प्रेषित।

दवे परिवार को बधाई

दिल्ली के श्री विनायकराय दवे तथा सौ. आशा दवे के विवाह की स्वर्ण जयंती (पचासवीं वर्षगांठ) की बधाई शुभकामनाएं। कुलदेव बाबा हाटकेश्वरनाथजी से प्रार्थना है कि वे दम्पति को दीर्घायु प्रदान करें। हाटकेश्वरनाथ नागर मंडल ने इस अवसर पर सम्पूर्ण परिवार को शुभकामनाएं प्रेषित की। जय हाटकेशवाणी परिवार की ओर से बधाई। दिनांक 16 अप्रैल 2010 को विवाह के पचास वर्ष पूर्ण हुए।

श्री प्रदीप नागर

सुपुत्र जयंतीलाल नागर
16 अप्रैल
बैंगलोर
(द. भारत)

हंसगुल्ले

शालू (नीलू से)- नीलू तुम कितनी पढ़ी-लिखी हो?
नीलू -बीए पास
शालू- अरे, बस दो कक्षा ही पढ़ी और वह भी उल्टी
इंस्पेक्टर- हवलदार, तुमने उस कैदी को क्यों नहीं पकड़ा ? वो तो तुम्हारे पास था।
हवलदार- साहब, वह ऐसी जगह घुस गया, जहां लिखा था अंदर आना मना है।
पिताजी- अरे प्रकाश, तूने ये कमरे की दीवारों की पेंटिंग करके दीवारें खराब क्यों कर दी?
प्रकाश- आपने ही तो बताया था कि ड्राइंग रूम है।
शिक्षक- राकेश बताओ महाभारत की लड़ाई इतनी लंबी क्यों चली?
राकेश- सर उस समय परमाणु बम का आविष्कार नहीं हुआ था।
एक मित्र- तुम नदी में कब तैरते हो?
दूसरा मित्र- जब किनारे पर कोई बचाने वाला खड़ा होता है।

जयेश दबे
259/स राजेन्द्र नगर, इंदौर

(युवक)

अमित वाणी विलास जोशी

जन्म 26/11/1983
शिक्षा - बी. कॉम. (कम्प्यूटर)
कार्यरत- प्रायवेट बैंक में एवं

सुमित वाणी विलास जोशी

जन्म दिनांक 4/06/1986
शिक्षा बी.कॉम (कम्प्यूटर)
सम्पर्क- 301, बजरंग नगर, पालिका माता मंदिर के पास जेतपुरा, खरगोन
मो. 98935-12524, 9165253925

अमित अरुण दवे

जन्म दिनांक
18/6/1976
कार्यरत-प्रायवेट जॉब
सम्पर्क सीडी-15ई, हरि नगर, नई दिल्ली-64
फोन 011-2812489
मो. 09899520755

श्री कौशिक राजेन्द्रप्रसाद वैद्य

जन्मतिथि 30/4/1968
जन्म प्रातः 11.37 ए एम अहमदाबाद
शिक्षा एम.कॉम
व्यवसाय- अनाजके केनवासिंग एजेंट
सम्पर्क - श्री राजेन्द्रप्रसाद वैद्य
222, नागर धर्मशाला के पास हाटकेश्वर वार्ड खंडवा (म.प्र.)
मो. 09424024639
094749430741

रितुल देवीदास गुरु

जन्म दि. 15/10/1985
शिक्षा बीई बिट्स पिलानी
कार्यरत- साफ्टवेयर इंजीनियर (वार्षिक 6 लाख)
सम्पर्क-बी-112,एलआईजी कॉलोनी, खंडवा
फोन 0733-2246856
मो. 9907459858

मोहित एस.के. नागर

जन्म दिनांक 30/01/1979
शिक्षा हायर सेकंडरी
कार्यरत- शासकीय नौकरी दिल्ली
सम्पर्क- 09818275787 (दिल्ली)

प्रणव डॉ. आर.डी. मेहता

जन्म 18 अक्टूबर (8.30 पीएम उज्जैन)
शिक्षा एम.ए. आर्कोलॉजी
कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग सिस्टम मैनेजमेंट
सम्पर्क - 51, स्टेशन रोड, बड़वाह
फोन -07280-222635

पुरुषोत्तम

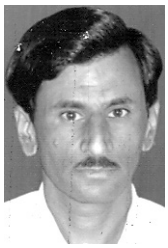

स्व. चंद्रशेखर नागर
उम्र 36 वर्ष
शिक्षा बारहवीं
कार्यरत - अध्यापक निजी विद्यालय एवं

बालमुकुंद

स्व. राधाकृष्ण नागर
शिक्षा बारहवीं
कार्यरत बागली में शासकीयसेवा में
सम्पर्क - श्रीराम मंदिर
सुभाष चौक, ऊन जिला खरगोन
फोन -07282-261335

आनंद अवनिशभाई देसाई

जन्म दि. 25.09.1979
9.26 प्रातः बड़ौदा
शिक्षा - बीई मैकेनिकल एम.सी.ए.
कार्यरत - आईबीएम इंडिया, बैंगलोर
सम्पर्क अवनिशभाई देसाई
13, छोटाभाई टैरेस न्यू खंड़ेराव रोड, बड़ौदा-1
फोन - 0265- 2427424

गौर वर्ण नागर ब्राह्मण उम्र 26 वर्ष कद 6'3'', कॉमर्स ग्रेजुएट, एविएशन एवं हॉस्पिटलिटी मैनेजमेंट में डिप्लोमा, एम.बी.ए. अध्ययनरत तथा ओबेराय इंटरनेशनल होटल ग्रुप में एक्जीक्यूटिव पद पर कार्यरत युवक हेतु वधु चाहिए। पिता राजस्थान में स्थापित व्यवसायी हैं। **सम्पर्क** 099291-66444, 094141-11011

हितेन्द्र लक्ष्मीकांत नागर

जन्म 8.3.1983
शिक्षा बी.ए. बीएड, एमए
नौकरी शिक्षक मक्सी (प्रायवेट)
पता- मु.पो. कनार्दी
तह. तराना जिला उज्जैन
मो. 98934-50576

मानव दिनेश कुमार झा

जन्म दिनांक 5 दिसम्बर 1981
शिक्षा बी.कॉम, एम.बीए, पीजीडीएस
कार्यरत कमर्शियल एक्जीक्युटिव (आरपीजी)
सम्पर्क अमित मेहता
51/65 एन.एस. रोड, रिसड़ा
हुगली (प.बंगाल) 9903037393
033-26724806

चिराग बीपिन नागर

जन्म 27 दिसम्बर 79
9.20 ए.एम., अमहदाबाद

शिक्षा डिग्री इन होटल मैनेजमेंट हॉस्पीटिलिटी मैनेजमेंट
सम्पर्क- स्थाई निवासी मुंबई
मो. 0044-7590982813
09004391914
फोन 022-28682936

सन्नी बीपिन नागर

जन्म दि. 18 दिसं. 1985**समय** 6.55 ए.एम., अहमदाबाद
शिक्षा डिग्री कोर्स बिजनेस मैनेजमेंट (मुंबई से) **सम्पर्क** मो. 09004391914
फोन -022 28682936

सरकारी स्कूल के बच्चे किसी को घसीटकर ले जा रहे थे। यह देखकर एक **आदमी बोला -** जाने दो यह खुद स्कूल आ जाएगा।
बच्चे बोले - यह बच्चा नहीं, मास्टरजी है।

वैवाहिक

कु अनुराधा
के.एन. शर्मा

जन्म दि. 12.8.1982
समय - 4.17 पीएम, राजगढ़ ब्यावरा
शिक्षा एमएससी (इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्युनिकेशन)
कार्यरत- व्याख्याता
सम्पर्क 767, नेहरू नगर, इंदौर
मो. 924546724, 9752910991

कु. मोनिका
देवीदास गुरु

जन्म दिनांक 6.12.1983
शिक्षा एमएससी माइक्रोबायलाजी एम.फिल. **सम्पर्क –**बी. 112, एलआईजी कॉलोनी, खंडवा
फोन 0733-2246856
मो. 9907459858

स्मृति
डॉ. आर.डी. मेहता

जन्म दिनांक 6 मई 1970
शिक्षा एम.ए. राजनीति शास्त्र (सीएडी)
सम्पर्क- 51 स्टेशन रोड बड़वाह
फोन 07280-222635
मो. 09977166556

कु. शक्ति
डॉ. आर.डी. मेहता

जन्म दिनांक 1 नवंबर 1976
शिक्षा–एम.ए. अंग्रेजी, डिप्लोमा फैशन डिजाइनिंग
सम्पर्क - 51, स्टेशन रोड खंडवा
फोन 07280-222635

प्रियंका जोशी

जन्म दिनांक 19.07.1988
शिक्षा बीएचएससी
सम्पर्क मो. 98935-12524
9165253925

खंडवा में हाटकेश्वर जयंती धूमधाम से मनाई गई

खंडवा। स्थानीय नागर ब्राह्मण समाज द्वारा हाटकेश्वर जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। प्रातः भगवान हाटकेश्वर का शृंगार किया गया एवं प्रातः 9 बजे से चल समारोह निकाला गया। इसमें भगवान हाटकेश्वर की पालकी, जुलूस को संगीतमय गाजे-बाजे के साथ शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए पुनः हाटकेश्वर मंदिर पहुंचकर चल समारोह समाप्त हुआ। स्थानीय नागर समाज के श्री भानूदय व्यास, श्रीकृष्ण व्यास, श्री नागेश व्यास ने जूना राम मंदिर रामगंज में, श्री प्रशांत दीक्षित, श्रीकांत दीक्षित ने घंटाघर चौक पर एवं श्री विनोद जोशी द्वारा खड़कपुरा स्थित निवास पर शीतल पेय की व्यवस्था की गई थी। श्री नरसिंहराव मंडलोई, श्री नरेन्द्र मंडलोई, श्री विजेन्द्र मंडलोई द्वारा हवन किया। सायंकाल भगवान हाटकेश्वर की आरती पश्चात प्रसाद वितरण हुआ एवं श्री नरसिंहराव मंडलोई परिवार, अध्यक्ष श्री देवी पोत्दार, उपाध्यक्षद्वय श्री विजयनारायण व्यास, श्री राघवेन्द्रराव मंडलोई, सचिव श्री प्रेमनारायण व्यास सहित समाज के सस्त सदस्यों द्वारा प्रसाद ग्रहण किया गया एवं भगवान हाटकेश्वर की कृपा से वार्डवासियों ने भी इस धार्मिक आयोजन का लाभ लिया।

माकड़ोन में हाटकेश्वर जयंती

माकड़ोन। 29 मार्च को स्थानीय श्रीराम मंदिर में हाटकेश्वर जयंती मनाी गई। सर्वश्री रामप्रसाद शर्मा, रमेश रावल, श्री वल्लभजी शर्मा का शाल, श्रीफल से भेंटकर सम्मान किया गया। इस अवसर पर श्री शैलेन्द्र रावल, ओम शर्मा, महेन्द्र शर्मा, अरुण शर्मा, राकेश रावल, गोपाल नागर, राहुल शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया तथा कार्यक्रम में विशेष सहयोग दिया।

इस अवसर पर भगवान हाटकेश्वर का शृंगार , पूजन-अर्चन किया गया। यह ऐसा महोत्सव है, जिसें नागर बंधु एकत्र होकर धार्मिक अनुष्ठान करते हैं तथा आपस में मेलजोल बढ़ाते हैं।

राष्ट्रीय राजधानी में हाटकेश्वर जयंती की धूम

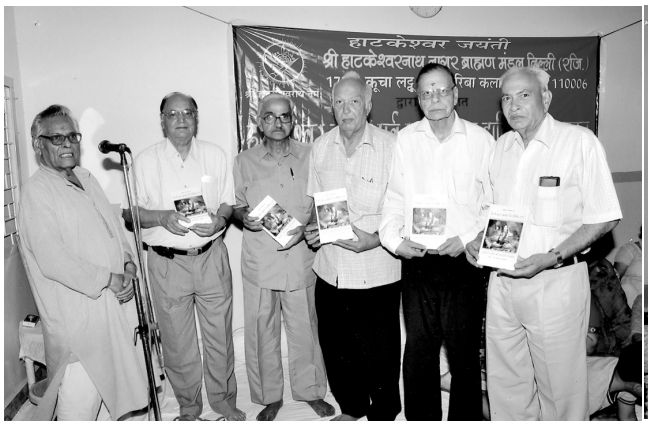

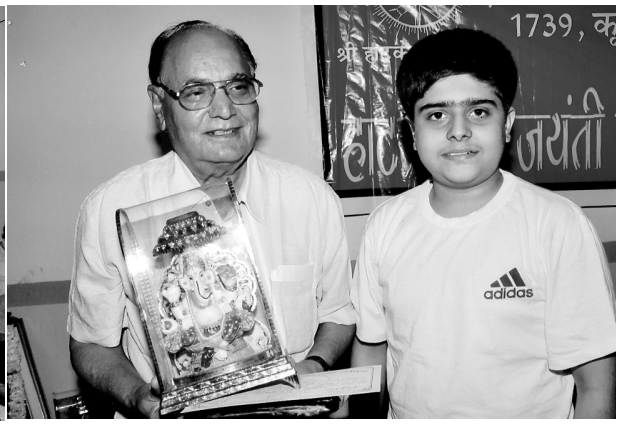

नई दिल्ली।

जगत् पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।

विश्व के माता-पिता श्री शिव-पार्वती को नमस्कार।

श्रद्धा-भक्ति विश्वासरूपिणौ- भक्तों की आस्था को सुदृढ़तम बनाने वाले श्री हाटकेश्वरनाथजी की जयंती को क्रमबद्ध इस प्रकार दिल्ली के भक्तों ने श्री हाटकेश्वर नाथजी के 1739 कूचाँलहट्टू दरीबां स्थित मंदिर में मनाया।

ध्वजारोहण- 10 बजे ध्वजारोहण सामान्य श्रद्धालुों की उपस्थिति में किया गया।

रुद्राभिषेक व रूद्रपाठ- उपस्थित शरणागत भक्तों द्वारा स्वनाम धन्य, गोत्र, वंश का उच्चारण करके दक्षिण सहित पूर्ण आत्मिक समर्पण के साथ करवाया गया। इस समय यजमान रूप से दिल्ली व विहार के भी भक्त उपस्थित थे। इस अवसर पर सर्वतोभद्र (चहुँमुखी कल्याण की कामना कारने वाले मंदिर के ही विद्वान पंडित श्री महेशचंद्र शर्मा ने पुरोहित के रूप में अनुष्ठान को विधिवत कराकर वातावरण को भाव भक्ति से आह्लादित कर दिया। मानो शिवपार्वती स्वयं प्रकट हो शुभाशीष दे रहे हैं।

मध्यान्ह कालीन सभा- 4 से 7 बजे सभा सुंदरतम आत्मा को जागृत करने हेतु सुंदर भजनों से प्रारंभ हुई जिसमें प्रमुख रूप से श्रीमती प्रेम नागर अशोक विहार, आभा देवी संचार लोक, इंदु दवे, नोएडा तथा बच्चों व महिलाओं ने शिव स्तुति व भजन गाए। ऐसा लगा जैसे भक्ति का निर्झर बह रहा हो।

संध्याकालीन प्रसंग- मंडल के प्रमुख कैप्टन (नौसेनानिर्वतमान) श्री चंद्रमोहन व्यासजी की उपस्थिति में उपप्रधान श्री सूर्यकांत नागरजी ने श्री हाटकेश्वर नाथजी मंदिर का वार्षिक लेखा-जोखा (आमदनी व खर्चे) का पूर्ण विवरण उपस्थित नागर सम्प्रदाय के सामने पढ़ा जो कि अनिवार्य था।

मेधावी छात्रों का सम्मान व पारितोषिक वितरण- कई वर्षों से लगातार तेजस्वी बच्चों को और यशस्वी बनाने के लिए यह सम्मान 80 प्रतिशत व अधिक प्रतिशत 10वीं व 12वीं की परीक्षाओं में अंक लेने वाले छात्र, छात्राओं का सम्मान किया जाता रहा है। इसके अंतर्गत इस साल भी दो बच्चों को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रथम श्री सुमेध व्यास सुपुत्र श्री प्रशांत व मातृ श्रीमती अल्पना व्यास द्वितीय कुमारी रशिका सुपुत्री श्री संजय तथा संध्या नागर को प्रशस्ती पत्र, बुद्धि दाता श्री गणेश की प्रतिमा प्रदान की गई तथा करतल ध्वनि से उन्हें प्रोत्साहित किया गया।

दूरभाष दिग्दर्शिका का विमोचन- श्री हाटकेश्वर नाथ नागर ब्राह्मण मंडल दिल्ली द्वारा पुनः सन् 2010 में दिल्लीवासियों के टेलीफोन्स का संकलन करके स्व. श्री सुधीर पाण्डया के सतत प्रयत्नों को उनके दिवंगत होने पर श्री विनोदकांतजी ने अत्यंत ही लगन से उस कार्य को सफलतापूर्वक पूरा किया। इसमें सम्पादक मंडल उप संरक्षक पक्ष श्री डॉ. पी.के. दवे, प्रमुख श्री सी.एम. व्यास की विशेष दिशानिर्देश एवं सहयोग रहा है।

यह निर्देशिका ही नहीं, वरन दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में बसने वाले, दिल्ली के विस्तृत क्षेत्रों के जातिबंधुओं को एक सूत्र में बाँधने वाले पवित्र रक्षा सूत्र के समान है।

आरती (दुखियों) के दुःखों को दूर करने वाली आरती जिसकी वर्तिकाओं के प्रकाश पुंज में जन्म जन्म के पापों को काटने की शक्ति है अतः- श्री भोलेनाथ की आरती रात्रि 8 बजे भक्ति भाव के साथ की गई। सबने पूर्ण समर्पण के साथ स्वयं को धन्य माना तब जय हाटकेश्वर से वातावरण गूंज उठा।

न्यात व प्रसाद- अर्थात उसकी कृपा प्राप्त करना।

इस उल्हास से भरे कार्यक्रमों का बाद एक पंक्ति एक साथ, एक सूत्र या धागों में बंधे नागर बंधुओं ने आरोग्य को देने वाला भोजन किया। उपस्थिति सज्जनों (शिव भक्तों) की संख्या लगभग 350 के करीब थी।

प्रस्तुति सी.एम. व्यास
सी. 55-डिफेन्स कॉलोनी
नई दिल्ली फोन 24337010
मो. 9811083098

लखनऊ में हाटकेश्वर जयंती महोत्सव

लखनऊ (उ.प्र.)। गौतमबुद्ध मार्ग शिवपुरी स्थित श्री हाटकेश्वरनाथजी मंदिर में नागर ब्राह्मण समाज ने अपने ईष्टदेव भगवान हाटकेश्वर की जयंती बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाई। प्रारंभ में रुद्राभिषेक श्री श्रीमती विपुला नागर एवं ज्योतिप्रकाश नागर ने किया। त्पश्चात महामृत्युंजय जप, शिवस्तुति, देवीपूजन किया गया एवं श्री राजीव नागर, श्री मनोरंजन पण्डया, श्री अशोक मोहन नागर सहित उपस्थितजनों ने भजन-कीर्तन किया। समापन से पूर्व श्री ज्योति प्रकाश नागर (राजीव) ने अपने सुपुत्र श्री सोहन नागर सौ. अदिति नागर(सुपुत्री डॉ. कमलकांत-सौ. सुधा मेहता) के विवाहोपलक्ष (9 दिसम्बर 09) पर प्रसाद के रूप में सभी उपस्थितजनों को श्रीखंड वितरित किया।

खजराना स्थित श्री हाटकेश्वर मंदिर में बाबा हाटकेश्वर भगवान का विशेष श्रृंगार किया गया। चित्र उसी अवसर का।

विशनगरा नागर समाज ने मनाई हाटकेश्वर जयंती

बांसवाड़ा। रवीन्द्र कॉलोनी में स्थित हाटकेश्वर महादेव मंदिर पर विशनगरा ब्राह्मण समाज ने हाटकेश्वर जयंती पर आयोजन किया। भगवान हाटकेश्वर की पूजा-अर्चना विधि-विधान से की जाकर समाज की खुशहाली के लिए प्रार्थना की गई। इस अवसर पर पं. ललित मेहता के निर्देशन में रुद्राभिषेक किया गया। ज्ञातव्य है कि खान्दू ग्राम माही बांध के डूब क्षेत्र में आने से सभी विस्थापितों को बांसवाड़ा में ही जगह दी गई है, जिसका नाम खान्दू कॉलोनी रखा गया है।

भंवरलाल जोशी
मो. 9461573566

अधिक मास के फल हेतु....

शाजापुर के प्रतिष्ठित परिवार की श्रीमती कल्पनादेवी गुप्ता द्वारा व्यक्तिगत निमंत्रण देकर समस्त नागर परिवारों को ब्रह्मभोज के लिए आमंत्रित किया गया। अधिक मास का फल प्राप्त करने के उद्देश्य से किए गए इस ब्रह्मभोज में पधारे सभी बंधुओं को दीपदान एवं रुपए के सिक्के भेंट किए गए।

फूलों से भव्य श्रृंगार

इलाहाबाद। दिनांक 29 मार्च को प्रयाग के समस्त नागरजनों ने (अन्य श्री हाटकेश्वरनाथजी के भक्तों के साथ) बाबा हाटकेश्वर नाथजी का फूलों से भव्य श्रृंगार किया। ग्यारह वेदपाठी पंडितों द्वारा रुद्रपाठ मधुरस्वर एवं अतुलनीय भव्यता के साथ किया। सभी ने बाबा श्री हाटकेश्वरनाथजी जयंती के अवसर पर बाबा का आशीर्वाद तथा प्रसाद ग्रहण किया।

प्रस्तुति-नित्यानंद नागर
इलाहाबाद

शाजापुर में हाटकेश्वर जयंती पर यज्ञोपवित सम्पन्न

शाजापुर। हाटकेश्वर जयंती महोत्सव के अंतर्गत यज्ञोपवित संस्कार का आयोजन किया गया। 28 मार्च को परिवार प्रमुखों की बैठक आयोजित की गई तथा 29 मार्च को प्रातः 8 बजे पं. रमेशजी रावल के आचार्यत्व में पूजन, अभिषेक किया गया। दोपहर 1 बजे 5 बटुकों का यज्ञोपवित संस्कार सम्पन्न हुआ। सायं 5 बजे भगवान हाटकेश्वर की शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें शाजापुर के साथ बेरछा, सुंदरसी, देंदला आदि गांवों के समाजजनों ने हिस्सा लिया। शोभायात्रा के दौरान महिला सदस्यों ने केशरिया वस्त्र धारण किए तथा सभी सदस्यों ने केशरिया दुपट्टा धारण कर सम्पूर्ण उत्साह के साथ बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। रात 8 बजे सहभोज का आयोजन किया गया, जिसमें सभी समाजबंधुओं ने सहभागिता की। महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती प्रेमलता मेहता एवं अन्य पदाधिकारियों ने सहयोग प्रदान किया।

सौ. ममता नागर

राजधानी में हाटकेश्वर जयंती मनाई

भोपाल। राजधानी में अरेरा कॉलोनी स्थित भगवान हाटकेश्वर मंदिर में पूजन अभिषेक के साथ हाटकेश्वर जयंती मनाई गई।

इस अवसर पर समस्त नागर समाज के भोजन प्रसाद की व्यवस्था श्री रामकृष्णजी मेहता की ओर से की गई। गत वर्ष के अनुपात में इस वर्ष विशेष उत्साह के साथ डॉ. वल्लभदासजी मेहता, सुभाष एन. व्यास, श्रवणेश्वरजी झा, अध्यक्ष श्री बालकृष्णजी मेहता, श्री तेजप्रकाश रावल, श्री लोकेन्द्र मंडलोई, श्री आर.के. नागर, श्री महेन्द्र नागर, श्री महेश्वर मंडलोई, श्री सुरेन्द्र नागर सहित बड़ी संख्या में समाजबंधुओं ने सपरिवार धर्मलाभ लिया।

दक्षिण मुंबई के हाटकेश्वर समारोह में हम हो गए सम्मिलित

यह एक सुखद संयोग ही था कि गत 29 मार्च को हाटकेश्वर जयंती के अवसर पर म.प्र. नागर समाजके वरिष्ठ सदस्य मुंबई में थे। उज्जैन नागर समाज के वरिष्ठ सदस्य व पूर्व अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्रकुमार नागर, इंदौर नागर समाज के वरिष्ठ सदस्य डॉ. महेन्द्र नागर व श्री सोहन नागर।हाटकेश्वर जयंती के महत्व को समझते हुए मुंबई में ही हाटकेश्वर जयंती मनाने का निश्चय हुआ। इस संकल्प को पूरा करने में मुंबई के ही श्री उदयनभाई त्रिवेदी की भूमिका प्रमुख रही। इन्हीं के आतिथ्य में ही हम लोग दक्षिण मुंबई के भुलेश्वर में भुलेश्वर वाड़ी पहुंचे, जहां लूना वाड़ा नागर समाज द्वारा हाटकेश्वर जयंती मनाई जा रही थी। संध्या वहां पहुंचकर पूजन हवन में सम्मिलित हुए, तत्पश्चात नागर बंधुओं ने, जिनकी की संख्या लगभग 100 थी, समीप ही स्थित हाटकेश्वर मंदिर में दर्शन किए, वहीं पर भगवान हाटकेश्वर की पालकी देखकर मन प्रसन्न हो गया। पालकी-यात्रा बड़ी धूमधाम से निकली। इस चल समारोह में दक्षिण मुंबई के सभी नागर बंधुओं ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के अंत में सांध्य भोजन का आयोजन हुआ। हम आभारी हैं उदयन भाई त्रिवेदी व किरीटभाई के जिनके कारण ही हम इस गरिमामय व आत्मीय समारोह में शामिल हो सके।

प्रेषक सोहन नागर
केम्प मुंबई

रतलाम रेलवे स्टेशन पर नागर महिला मंडल द्वारा जल मंदिर का उद्घाटन प्लेटफार्म नंबर 5 और 6 पर पूर्व मंत्री हिम्मत कोठारी द्वारा किया गया। इस अवसर पर महिला मंडल की अध्यक्ष सुश्री मंगला दवे उपस्थित थीं। स्वागत भाषण सौ. बिंदु मेहता ने दिया एवं संचालन श्रीमती कल्पना मेहता ने किया।

सेवानिवृत्ति के पश्चात पूरी तरह समाजसेवा में जुट गए श्री के.पी. नागर

आगर। उज्जैन संभाग के आगर क्षेत्र में बड़ी संख्या में नागर परिवार निवास करते हैं। इन्हीं में से श्री के.पी. नागर को उज्जैन-शाजापुर तथा इंदौर क्षेत्र के सामाजिक आयोजनों में विशेष रूप से सक्रिय पाया है। जब श्री नागर से उनके जीवन के बारे में जानकारी ली गई तो उन्होंने बताया कि मैं सेवानिवृत्ति के पश्चात सामाजिक, धार्मिक सेवा में तत्पर हूं। मैंने पुरुषोत्तम कुंछल को प्रेरणा देकर आधा बीघा जमीन सर्वब्राह्मण समाज को दान में दिलवाई तथा तत्कालीन विधायक श्रीमती रेखा रत्नाकर द्वारा दान प्राप्त कर वहां धर्मशाला निर्माण किया गया है। श्री नागर के वर्तमान विास के निकट श्री हनुमान मंदिर का निर्माण चल रहा है।

उन्होंने बताया कि मैंने विभिन्न गुटों में बंटे सर्वब्राह्मण समाज को एक मंच पर एकत्र किया तथा समाज के सर्वमान्य व्यक्ति प्रेमनारायण शर्मा जिन्होंने चार बीघा जमीन खरीदी है तथा अन्य ब्राह्मण संगठनों को एक जाजम पर बैठाकर कमल कुण्डी पर बैठक का आयोजन किया जाकर ब्राह्मण समाज का गठन किया गया।

इस अवसर पर प्रेम गुरु ने पौन बीघा जमीन समाज की धर्मशाला के लिए दान दी, चूंकि वे औदिच्य समाज के थे, किंतु उनके समाज का अध्यक्ष न बनाते हुए श्री नागर को ट्रस्टी अध्यक्ष बनाया गया। यह हमारे समाज के लिए गौरव की बात है।

अंत में यही कि -मानव जीवन है अनमोल
इसका नहीं कोई तोल न मोल
मानव जीवन पाया है हमेशा सच-सच बोल

सम्पर्क के.पी. नागर
शा. कर्मचारी गृह निर्माण समिति,
आदर्श नगर टोल नाका, उज्जैन रोड,
आगर

विदेश में भी सराही गई संतति

अपनी कनाडा व अमेरिका की यात्रा के दौरान संतति की कुछ प्रतियां मैं अपने साथ ले गया था। विदेश में जहां-जहां भी गया इस पत्रिका की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। डे ट्राइड (अमेरिका) के प्रसिद्ध प्लास्टिक सर्जन डॉ. सतीश व्यास के उद्‌गार कुछ इस प्रकार रहे-

नागर वंश के 150 वर्षों के इतिहास एवं वंश वृक्ष की जो जानकारी इस पत्रिका द्वारा दी गई वह संग्रहणीय तो है ही साथ ही साथ विलक्षण भी है। 150 वर्षों की नागर प्रतिभाओं का संकलन व उनका विवेचन अद्‌भुत है- मेरे लिए यह एक प्रेरणा है। प्रयास करूंगा कि मैं भी अपने परिवार के लिए ऐसा कुछ कर सकूं।

अमेरिका में ही डॉ. मनमोहन नागर की पुत्री मोनिका व दामाद आशीष कुलकर्णी द्वारा इस पत्रिका की प्रशंसा की गई। उनके अनुसार उन्हें इसमें ऐसी जानकारियां प्राप्त हुई, जिससे वो कदापि परिचित नहीं थे।

इसी प्रकार फ्लोरिडा (अमेरिका) स्थित पं. विजय के भानजे हर्ष दवे व उनकी पत्नी रंजीता दवे तो इस पत्रिका के बारे में जानकर ही प्रफुल्लित हो उठे व प्रशंसा के बुल बांध दिए। कनाडा में कार्यरत मेरे पुत्र डॉ. रोहित नागर व पुत्र वधु डॉ. निधि नागर तो कई दिनों तक इस पत्रिका को पढ़ते रहे वे इसकी सामग्री व पुराने चित्रों को देखकर आश्चर्यचकित थे। उन्हें लगा इस पत्रिका के माध्यम से मानो वे अपने वतन-गांव अपने पुराने दिनों में लौट गये हैं। उनके लिए यह सब बड़ा मार्मिक था।

अंत में यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि संतति रूपी खोजपूर्ण कृति अपने आप में अनुपम व अद्‌भुत है, जिसकी चारों ओर प्रशंसा हो रही है।

प्रेषक - सोहन नागर
19/6, मनोरमागंज, इंदौर

वाद-विवाद प्रतियोगिता-9

अपनी पहचान के लिए उपनाम के आगे (नागर) लगाएं

जय हाटकेशवाणी द्वारा आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता के माध्यम से ज्वलंत विषय उठाये जा रहे हैं। कई बार हमारे समाज के लोग जब अपने उपनाम में 'नागर' के अलावा शर्मा, जोशी, दुबे, दवे, मेहता और न जाने कितने उपनाम लिखते हैं तो कई बार पता ही नहीं चलता कि हम नागर ब्राह्मण हैं। यदि मैं कहूंगी कि आप सब नागर ब्राह्मण अपने उपनाम में केवल नागर ही लिखें तो यह न्याय संगत इसलिए नहीं होगा, क्योंकि आप को पुराने उपनाम के साथ पहचाना जाता है। तथा उसे एकदम परिवर्तन कर दिया तो पहचान का संकट उत्पन्न हो जाएगा। इसलिए विषय में कहा गया है कि अपने उपनाम के आगे कोष्टक में (नागर) लिखना शुरू कर दें। सैकड़ों हीरों के साथ रखे कोहिनूर हीरे को जिस तरह हर कोई पहचान सकता है उसी प्रकार हम भी किसी हीरे से कम नहीं हैं। परंतु आज समय बहुत बदल गया है। आप जब तक समाज में आते-जाते रहते हैं... सक्रिय रहते हैं तो हर कोई पहचानता है, जहां मुख्य धारा से बाहर हुए कि आपकी पहचान खत्म, अब हम अपने काम धंधे के सिलसिले में अपने शहर से निकलकर देश के किसी कोने में या विदेश तक जा बसते हैं। उसी अनुसार हमारी वेशभूषा भी देशकाल के साथ उसी रंग में रंग जाती है, रहन-सहन भी बदल जाता है, किंतु एक चीज है नाम वह कहीं भी जाओ नहीं बदलता। अतः उस नाम उपनाम के आगे हम (नागर) लगा लेवें तो हमारी पहचान उसी रूप में देश-विदेश में हो जाएगी। हमारे समाज बंधुओं के यदि हम किसी भी रूप में सहयोगी बनना चाहते हैं तो सबसे पहले यह आवश्यक है कि वे हमें पहचानें, उस पहचान की खातिर हम सब संकल्प लें कि हमारा उपनाम चाहे कुछ भी हो, जिसके माध्यम से अभी तक हमें पहचाना जाता रहा हो, उसके आगे (नागर) लगाना शुरू कर दें। साथ ही सामाजिक, धार्मिक और पारिवारिक कार्यक्रमों में अपनी उपस्थिति अवश्य रखें, ताकि हमें पहचाना जाता रहे... हम किसी समाजबंधु के काम आ सकें। अंततोगत्वा आपसी सहयोग से ही हमारा समाज आगे बढ़ सकेगा। न तो हम छिपे हुए रहें... न हमारा नाम।

(सम्पादक)

आगामी वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय है ।

समाज के लिए धर्मशालाएं बनें या आधुनिक गार्डन ?

वाद-विवाद प्रतियोगिता 8 के विजेता
सौ. अल्पना दवे, इंदौर

पहचान बताने के और भी तरीके हैं

माना कि नागर हमारी पहचान है, लेकिन जो उपनाम हम लगा रहे हैं उसके साथ नागर लगाने पर हमारे दो उपनाम हो जाएंगे, जो कि समाज से बाहर स्कूल-नौकरी व अन्य स्थानों पर तकलीफ दे सकते हैं। हर व्यक्ति यह पूछेगा कि तुम्हारा असली उपनाम क्या है?

इसका क्रियान्वयन भी कठिन होगा। इसके लिए किसी को बाध्य नहीं किया जा सकता। यह सिर्फ नागर उपनाम का उपयोग करने लगे तो एक ही नाम के व्यक्तियों को अलग-अलग उपनाम से पहचाना जाता है। एक ही नाम एवं उपनाम से एक से अधिक व्यक्ति होने पर अन्य पहचान जैसे स्थान, संबंध का उपयोग करना होगा। पुराना उपनाम हटाकर नागर लगाने के लिए कानूनी कार्यवाही की आवश्यकता होगी।

वैसे भी नागर ब्राह्मण जाति का संबोधन है। किसी भी समाज में जाति के अलावा अलग उपनाम कुछ सोचकर ही बनाए गए होंगे। हमें अपनी पहचान नाम से नहीं काम से बनाना चाहिए। नागर का अर्थ होता है - ना-गर अर्थात विषरहित, अमृत, चतुर। हमारा प्रतीक चिन्ह जिस में करछी, कलम और कटार बनी हुई है। हमारे समाज के व्यक्ति पाक कला, लेखन कला एवं युद्ध कला में निपूण होते हैं। अपनी भावी पीढ़ी को इस चिन्ह से परिचित करवाना चाहिए। अपने घर की नेमप्लेट, लैटर पेड, स्वयं के परिचय पत्र तथा निमंत्रण पत्र पर इस प्रतीक चिन्ह को अवश्य छपवाना चाहिए। जो कि नागर की पहचान बतलाता है। परिवार तथा समाज के सदस्य एक-दूसरे से मिलने पर हाय, हलो, नमस्ते अन्य संबंध के स्थान पर जय हाटकेश कहें। यह भी एक नागर होने का प्रमाण होगा तथा भगवान का स्मरण भी होगा, जिस प्रकार दो जैन हमेशा जय जिनेन्द्र तथा दो सिख हमेशा सत श्री अकाल कहकर संबोधन करते हैं, जिससे उन्हें आप अलग पहचान जाते हैं।

अल्पना दवे
259/स, राजेन्द्र नगर, उज्जैन,
फोन - 0731-2321470

हमारे नाम से हो जाए हमारी जाति की पहचान

संसार-सागर में प्राणी की अपनी पहचान होना अहम है, पानी की बूंद की भी पहचान होती है। वह सीप में जाकर मोती बन जाता है। मानव के इस असंख्य संसार में उसकी स्वयं की पहचान होगी तब ही वह सबके साथ अलग चिन्हित हो पाएगा। इस संसार में मानव के पदार्पण के पश्चात नामकरण संस्कार के साथ उसकी पहचान घोषित की जातीहै तथा उसी से वह अपने जीवन में जाना-पहचाना जाता है।

व्यक्ति की पहचान उसके नाम, परिवार, व्यवहार, कर्त्तव्य पालन, काम करने, पेशा सामाजिक व्यवहार व चरित्रसे ही अपना स्थान बनाती है। उसके अपने नाम,कुल गौत्र एवं काम के कर्त्तव्य से समाज, गांव, शहर,

स्कूल-पाठशाला एवं जानकारी दर्ज हो, पहचान उद्‌भव होती। जीवनभर यह पहचान उसका साथ देती है। जो कि जीवन का अटूट अंग बन जाता है। मानव को उसके नाम-पिता के नाम, परिवार के कुल गौत्र, काम से आधार बन सामाजिक पहचान यत्र-तत्र बन जाती है। इसी से उसका जीवन वृत दैनंदिन संसार में संचालित होता है। व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके चरित्र, व्यवहार, कार्य करने के तरीके, समाज में व्यवहार, ईष्ट मित्रों से सामंजस्य-प्रशासन में कर्त्तव्य बोध व निष्ठापूर्वक कार्य से निखरता व दैदिप्यमान सद्‌व्यवहार सत्कर्म से होता है।

समाज में पारिवारिक स्थान के अनुसार अपने नाम के साथ कुल गौत्र अथवा कार्य के अनुरूप उपनाम रख लेता है। इस लघु नाम से जाना-पहचाना जाने लगता है। ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होने से ब्राह्मणत्व कुल अनुरूप उसका नाम भी रख लिया जाता है और वह उसकी पहचान होती है। नागर ब्राह्मण यह एक ब्राह्मण समाज की उक्ति है तथा इसका अपने आप में व्यापक स्वरूप शाब्दिक रूप से बन गया है। समाज के व्यापक रूप से सोचा जाए तो परिवार के गौत्र अथवा कुल के अनुसार जो उपनाम रखे गये हैं उनके साथ 'नागर' विशिष्ट रूप से लगाना उपयुक्त नहीं लगता है। ब्राह्मण है, समाज में नागर ब्राह्मण कहलाते हैं। तो समाज में पारिवारिक स्थिति उपनाम से चिन्हित है तो उसे क्यों गौण किया जाए? उचित तो यह होगा कि जो उपनाम कुटुम्ब के अनुसार है उसे यथावत रहने दिया जाए, नागर पृथक से लगाने की अवश्यकता नहीं है। जो नागर है तथा नागर उपनाम ही प्रयुक्त करते हैं, उनके प्रति कोई आपत्ति नहीं है।

पी.आर. जोशी
528, उषानगर
एक्सटेंशन,
इंदौर (म.प्र.)

व्यंजन विधि प्रतियोगिता-8

मौसम के अनुसार आम के खास व्यंजन आपके लिए प्रस्तुत किए हैं। इस प्रतियोगिता में विजेता रही हैं। सीमा पंडित। आगामी व्यंजन प्रतियोगिता का विषय फलों के ज्यूस बनाने विधि आप तुरंत २५ मई से पहले अपनी विधि लिखकर भेज देवें।

आम की सॉफ्टी आईस्क्रीम

सामग्री- 1/2 लीटर दूध, 250 ग्राम आम का रस, जीमएस पाउडर चार छोटी चम्मच, कार्न फ्लावर - चार छोटी चम्मच, एलजीनाल एक चुटकी, शक्कर 3 चम्मच, ड्रायफ्रूट्स, एक कटोरी मावा

विधि- सबसे पहले दूध को लगभग आधा होने तक गैस पर उबालें। ठंडा होने पर जीएमएस पाउडर व कॉर्न फ्लावर डालें। इसमें एलजीनाल (एक चुटकी) डालें। कम आंच पर थोड़ी देर उबालें फिर शक्कर मिला दें। ठंडा होने पर ड्रायफ्रुट्स, मावा व आम का रस मिलाकर मिक्सी में घुमाएं। इस मिश्रण को फ्रीज में जमन के लिए रख दें। तैयार है आम की सॉफ्टी आईस्क्रीम।

पुष्पा मेहता
51, नागरवास, रतलाम
9229877731

आम खंड

सामग्री- 500 ग्राम चक्का दही का, 100 ग्राम आम का गुदा, 300 ग्राम शक्कर, 50 ग्राम पिस्ता, काजू, किसमिस खुंदे आम का एशेंस

विधि- दही के चक्के में शक्कर डालकर अच्छी तरह से मिला लें। फिर उसमें आम का गुदा और 2 बूंद आम का एशेंस डालकर फिर से अच्छी तरह मिला लें। अब उसमें काजू, किसमिस और पिस्ता डालकर मिलाएं। 2 घंटे फ्रीज में ठंडा होने के लिए रखें और फिर ठंडा-ठंडा परोसें।

व्योमा नागर

आम का जेम

सामग्री- 4 कप आम छिले और कसे हुए, 2 कप शक्कर, 1 चम्मच वेनीला एसेंस, 1/2 कप पानी

विधि- आम को शक्कर व पानी के साथ पीसकर गाडा पेस्ट बना लें। फिर उस पेस्ट में एसेंस मिलाकर कुकर में 2 सिटी तक पकने दें। फिर उसे ठंडा होने दें। बोतल में भरकर फ्रीज में रखें और ठंडा होने पर इस्तेमाल करें। आपका जैम तैयार है।

साधना नागर

आम पाक

सबसे पहले 1 किलो हापुस आम लेंगे। (बादाम या तोतापरी भी ले सकते हैं)। आम को धोकर उसका पल्स (गुदा) निकाल लें। उसके बाद एक कढ़ाई में साँची का 1 किलो दूध लेकर उसे उबालें। दूध में चुटकीभर फिटकरी और 200 ग्राम शक्कर डालकर उबालें। जब तक की दूध गाढा न हो जाए और जब दूध गाढा होकर कढ़ाई छोड़ न दे उसके बाद उसमें आम का पल्प डाल दें व उसे हिलाते जाएं। जब तक कि वो गाढा न हो जाए। जब उसका गोला बनने लगे तब उसे 1 चम्मच घी डालकर हिलाएं व उसे एक थाले में घी लगाकर जमा दें। उसमें आप स्वादानुसार इलायची पावडर, किसमिस, काजू, बादाम, पिस्ता डाल सकते हैं। जब वह जम जाए उसे परोसें।

अलका मेहता
बी- 208, अल्कापुरी अम्बा चौक,
रतलाम (म.प्र.)
फोन - 9406815634 फो. 240254

मैंगो जैली

सामग्री- 500 ग्रा. आम (बादामी या कलमी), 300 ग्रा. शक्कर, इलायची (स्वादानुसार)

विधि- छिले हुए आम को काटकर मिक्सर में महीन पीस लें (पानी रहित) अब इसे धीमी आंच पर 8-10 मिनट तक पकाएं। फिर इसमें शक्कर डालकर गाढ़ा होने तक पकाएं तथा स्वादानुसार इलायची पावडर डालें। अब दूसरे बर्तन में निकालकर ठंडा होने के लिए रख दें। ठंडा होने पर फ्रीज में रखें। पराठे या पुरी के साथ सर्व करें।

नोट - 15-20 दिन तक प्रिजर्व कर सकते हैं तथा बच्चों के टिफिन व सफर में सुरक्षित रूप से ले जा सकते हैं।

श्रीमती सुधा देवीदास गुरु
एलआईजी कॉलोनी, खंडवा
फोन- 733-2246856

आम का हलवा

विधि- आप आम का हलवा किसी भी दिन या त्योहार पर बना सकते हैं। बड़ा ही जायकेदार और मनपसंद होता है। इसको बनाना बड़ा आसान है, बढ़िया किस्म के मीठे आमों का रस निकाल लें, फिर उसमें मात्रानुसार बादाम, नारियर की गिरी (किस) बारीक-बारीक काटकर भूनकर मिला दें, इसके बाद एक तार की चाशनी तैयार कर पकाएं

और रस मिला दें, यह जब गाढ़ा हो जाए तो उतार लें। इसको किसी बड़े थाल में शुद्ध घी का लेप करके उसमें जमा दें। आपका स्वादिष्ट हलुआ तैयार हो गया।

श्रीमती भारती नागर
380, तानसेन नागर, पुष्पांजलि भवन, ग्वालियर (म.प्र.)
मो. 98278-64677

आम की दिलजानी

जरूरी सामग्री- आम केसर पट्टा आधा किलो, शक्कर आधा किलो, बेसन 250 ग्राम, इलायची 3 या 4, केसर 3 नग, बादाम पिस्ता कतरन, घी आधा किलो, गुलाब की पत्ति, आम का एस्सेंस, तरबूज के बीज आदि

विधि- आम को छीलकर पीस लें और छान लें। इसमें बेसन मिलाकर पतला घोल तैयार कर लें और कुछ देर के लिए रख दें, शक्कर की एक तार की चाशनी बना लें। इसमें केशर डालकर ठंडा होने के लिए रख दें। कड़ाई में घी गरम करें और कड़ाई के ऊपर झारी रखकर इसके ऊपर से पहले तैयार किये गये घोल को डालें, ताकि छोटी-छोटी नुक्ती बन जाए, तीन चार मिनट बाद उन्हें तैयार ठंड़ी चाशनी में डाल दें, तीन-चार मिनट बाद चाशनी में से निकालकर थाली में फैला दें- इसमें इलायची पावडर, बादाम पिस्ता कतरन, गुलाब की पत्तियां और तरबूज के बीज के साथ कुछ बूंद आम का एसेंस भी डाल दें। आम की दिलजानी का स्वाद लें। आम का खट्टा होना और घोल का पतला होना जरूरी है।

अल्पना दवे
राजेन्द्र नगर, इंदौर
0731-2321470

जय के घर ससुराल वाले आए।

बीवी ने कहा- मेहमानों के लिए बाहर से कुछ ले आओ।

जय बाहर गया और टैक्सी ले आया।

●●●

रामू (श्यामू से)- क्यों यार, कस्टमर किसे कहते हैं?

श्याम- सीधी सी बात है, जो कष्ट से मर जाए, उसे कस्टमर कहते हैं

वर्षगांठ के अवसर पर शुभकामनाएं

सेवा एवं परोपकार से जीवन को बनाया धन्य

श्री सूर्यप्रकाश मेहता
वरिष्ठ अभिभाषक

शाजापुर के प्रमुख, प्रतिष्ठित एवं स्थापित परिवारों में से एक इस सादे व्यक्तित्व से हर कोई परिचित है। कठिन परिश्रम, दया, उदारता और परोपकार की भावना का पर्याय बन चुके आदरणीय पिताजी का जीवन-चरित्र आदर्शों से भरा पड़ा है। कानूनी शिक्षा सूरत से प्राप्त करने के पश्चात अपने पिता स्व. श्री नारायणजी मेहता के आशीर्वाद एवं निर्देशन में वे इस क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ते गए। साथ ही लॉ कॉलेज में शिक्षण कार्य भी किया। नागर समाज के अलावा ब्लाक कांग्रेस कमेटी और रोटरी क्लब के अध्यक्ष रहते हुए आपने खासी लोकप्रियता अर्जित की। कई मंदिरों व ट्रस्टों के कोषाध्यक्ष एवं अन्य पदों पर रहकर समाज को आपने अपनी निस्वार्थ सेवाएं दीं। किसी भी परिस्थिति में मनः शांति न खोते हुए दूसरों को हिम्मत देना तथा कर्त्तव्य को अंजाम देना यह अब कम ही दिखाई देता है। आज भी जब परिवार में कोई कठिन परिस्थिति आती है, तो मुझे सबसे पहले पापा दिखाई देते हैं। आपसे विचार-विमर्श कर उस कठिन परिस्थिति का सामना करने में अपने आपको मैं सक्षम पाती हूं।

कर्म करते जाओ, फल की चिंता मत करो गीता के इस महावाक्य का आपने अनुकरण किया। ऐसी कितनी ही यादें हैं, अनुभव हैं, जिसने मुझे आदरणीय पिताजी की महानता का बोध कराया।

आदरणीय पिताजी की कर्मठता, संकल्पबद्धता और विचार शक्ति को प्रणाम करते हुए 18 अप्रैल को जीवन के 'प्लेटिनम जुबली वर्ष' के प्रारंभ होने के अवसर पर राजेश, मीना-किशोर त्रिवेदी, वंदना-विनय नागर, निधि, अक्षय, जय, अंकित सहित समस्त परिवारजनों एवं सम्पूर्ण नागर समाज की ओर से दीर्घायु होने की शुभकामनाएं।

प्रस्तुति
श्रीमती वंदना नागर
125, पलसीकर कॉलोनी, इंदौर
98939-44336

वाक ब्रह्म

सचमुच ! जो प्रभु पर प्रेम करता है वही सुखी है।

साक्षात ईशप्रेम का अनुभव होगा।

तो मानवीय प्रेम की क्या कीमत है।

मानवीय प्रेम में हमेशा कड़ुवापन होता है, ईश प्रेम ही हमें कभी भी निराश नहीं करेगा।

केवल बातें न करते हुए प्रभु का सच्चा प्रेम पहचानकर और उसके कार्य के लिए आत्मसमर्पण करके ही प्रभु के पास जा सकते हैं।

एक परिचय-परमविदूषी श्रीमती अनुराधा नागर

प्रवचन और सेवा साथ-साथ

प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती, बल्कि अपनी पृथक पहचान स्वयं बनाती है। ऐसी ही प्रतिभा हमारे नागर समाज में है परम् विदुषि कृष्ण प्रिया श्रीमती अनुराधा नागर, जो समाज में विशिष्ट पहचान रखती हैं और विद्वान प्रवचनकारों में अपना नाम अंकित करवाने में सफल रही। इनके पिता स्व. श्री भेरूलाल नागर बालोन जिला देवास विद्वान एवं प्रसिद्ध ज्योतिष रहे। बाल्यकाल से ही अपने अग्रज सुरेशचंद्र नागर से प्रेरणा मिलती रही और उन्हीं से इनको संगीत व भक्तिरस की शिक्षा मिलती रही। आपका विवाह झोंकर निवासी. स्व. श्री वआमनदत्तजी नागर 'अशोक' (मालवी कवि व ज्योतिषि) के पुत्र अभय नागर शाजापुर से हुआ। घर परिवार की समस्त जिम्मेदारियों का बखूबी निर्वाह करते हुए आपने धर्मग्रंथों, पुराणों व ज्योतिष ग्रंथों का अध्ययन करते हुए श्रीमद भागवत, रामचरित मानस पर अपने तरीकों से व्याख्या करते हुए कथा प्रवचन प्रारंभ किया। संगीत में इन्होंने अपने कोकिलकंठ से उन प्रवचनों में चार चांद लगा दिए। अनुराधाजी नागर स्वरचित भजनों को संगीतबद्ध भी स्वयं ही करती हैं। आपकी भोपाल दूरदर्शन एवं आकशवाणी इंदौर से भी गीत एवं कविताएं प्रसारित हो चुकी हैं। इनके द्वारा गायी गई भजनों की सीडी एवं प्रवचन तथा निर्गुणी भजनों की सीडी भी जारी की गई है। नागर समाज शाजापुर व सर्वब्राह्मण समाज शाजापुर द्वारा भी इन्हें विशिष्ट उपलब्धियों द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। इनके अनेकों भक्त देश-विदेश में मौजूद हैं। आपके पास पूर्वजनों की धरोहर के रूप में भृगुसंहिता (कर्मविपाक शास्त्र) है, जिसके द्वारा पूर्व जन्म का लेखा-जोखा देखा जाता है। किसी को पूर्व जन्मीकृत दोष के कारण संतान न होना या कार्यक्षेत्र में अवरुद्धता अथवा शारीरिक रोग का निवारण भी इसी शास्त्र द्वारा अनुष्ठान से होता है। भृगुसंहिता में कई निःसंतान दम्पति और असाध्य रोग ग्रस्त लोग लाभान्वित हुए हैं। कृष्ण प्रिय अनुराधाजी ने अपनी प्रभावशाली वाणी से लोगों की जीवनशैली बदल दी है। ये अपने अमृत वचन में सदैव कहती हैं कि नारी को नारी ही नहीं नारायणी होकर रहना चाहिए, जिससे परिवार, समाज और राष्ट्र में सभी को सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र की प्राप्ति हो। मनुष्य स्वयं धर्म पर चले और औरों को चलना सिखाए। आप आदिवासी और गरीब तबके के लोगों के लिए शबरी जाति मिशन चलाती हैं, जिसकी वे संरक्षक हैं एवं सर्वधर्म सत्संग समिति की संभागीय अध्यक्ष हैं। श्रीमती नागर की श्रीमद् भागवत चाणक्यपुरी देवास में दि. 2 मार्च 2010 से 8 मार्च 2010 सम्पन्न हुई, जिसमें सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इनका एक और कार्यक्रम 21 से 27 अप्रैल 2010 तक बालगढ़ देवास में सम्पन्न हुआ।

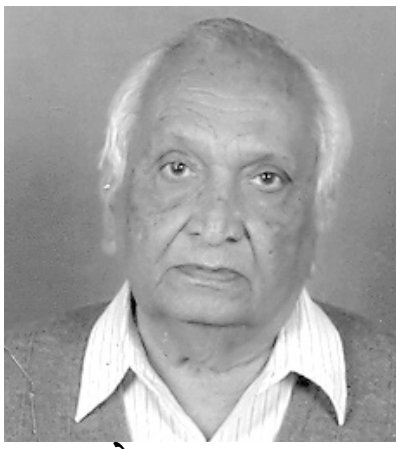

स्व. ओमप्रकाश सुपुत्र स्व. शिवशंकर शर्मा

(बागली वाले) इंदौर म.प्र.

देहावसान दिनांक 18-4-10 की स्मृति में

जीयें तो खुशी के लिए जीयें मरें तो हंसते हुए मरें

जीवन भगवान की सबसे बड़ी सौगात है। मनुष्य जन्म ईश्वर का अमूल्य उपहार है, इसीलिए जीवन को बड़े उद्देश्य और सामाजिक सेवा कार्य में लगाना बहुत बड़ी बात है। यह एक तीर्थ स्वरूप पवित्र पुण्य कार्य है। कुछ विशेष लोगों को ही ईश्वर ने मानव सेवा हेतु इस लोक में भेजा है, जो कि पिछले जन्म का प्रारब्ध तथा वर्तमान में श्रद्धेय गुरुजन माता या मित्रों की प्रेरणा की फल है। ऐसे समाज सेवी व्यक्तित्व अपने पुजारी छोटों से स्नेह, बड़ों का सत्कार, सबसे प्यार करते हुए अपने जीवन की नैया को संसार रूपी भवसागर से पार लगा देता है।

इंदौर नागर समाज में ऐसे इस दुनिया से कूच कर गये, जिसके जाने की उम्मीद नहीं थी। इनकी हर बात आज भी मन पर गहरी छाप छोड़ गई। धर्मप्रेमियों से मजाक करते कहते थे मेरे नाम का जाप करने से ही तुम्हारा कल्याण होगा। अर्थात सदा ऊँ का उच्चारण करते रहो। आपने अपने विभाग (शिक्षा विभाग) में शिक्षक पद पर सफलतापूर्वक 40 वर्ष तक सेवाएं दीं व 10 वर्ष पूर्व सेवानिवृत्त हुए थे। इनकी पत्नी इंदिरा शर्मा धर्मशील, ज्ञानशील होते हुए सामाजिक कार्यों रुचि लेकर कार्यरत हैं। इन दोनों ने अपनी चातुर्यता से अपने परिवार के दायित्वों को निभाया व निभा रही हैं। स्व. ओमप्रकाशजी एक मिलनसार, निर्भीक तथा स्वाभीमानी रहे। इनके सम्पर्क में आने वाला छोटे से बड़ा व्यक्ति हंसता हुआ ही इनके द्वार से जाता था। अपने मित्रों को, विद्यार्थीगणों को सदा जीवन का सही मार्ग चुनने की कला बताते थे। प्रसिद्ध राजनीतिक गुरु विष्णु... चाणक्य ने कहा कि दुःख में ही सच्चे मित्र की पहचान होती है। गुणवान मित्र जीवन में सदा सुख-शांति लाता है। इनका कथन है कि मित्रता की कोई सीमा नहीं होती। अपने परिवार में भी मित्र बन सकते हैं। यह बात नहीं भूलना चाहिए कि जब आपके बेटे बड़े हो जायें तो इन्हें भी अपने मित्र के समान समझकर व्यवहार करें, तभी परिवार में सुख-शांति मिल सकती है। इसी भावना से मैं इन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि देता हूं तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूं इन्हें सद्गति प्राप्त हो, शांति प्राप्त हो । इति।

प्रस्तुतकर्ता- नवीनचंद्र रावल
133ए तुलसी नगर, इंदौर

हाटकेश्वर जयंती २८ को या २९ को?

अभी तो ठीक है, भविष्य में ध्यान रखें

हाटकेश्वर जयंती का पर्व चैत्र शुक्ल चतुर्दशी के दिन नागर ब्राह्मणों द्वारा मनाया जाता है। यहां विचरणीय यह है कि यदि उपर्युक्त चतुर्दशी की व्याप्ति दो दिनों में हो तो यह पर्व कब मनाया जायेगा? प्रथम दिन या द्वितीय दिन। इस वर्ष ऐसा ही हुआ, उपर्युक्त चतुर्दशी इस वर्ष 28 मार्च को लगभग अपरान्ह में लगी और 29 मार्च को पूर्वान्ह तक रही। प्रायः सभी पंचांगों में 28 मार्च को दिन में 2 बजे के बाद यह चतुर्दशी लगी दिखाई गई और 29 मार्च को दिन में 11बजे के लगभग तक यह रही है, इस प्रकार पंचांगकारों ने 28 एवं 29 मार्च को लगभग आधे-आधे दिन चतुर्दशी दिखाई दी है। अब यहां धर्मशास्त्रीय दृष्टि से विचारणीय यह था कि हाटकेश्वर जयंती कब मनाई जाये। 28 मार्च को या 29 मार्च को ? किंतु ऐसा नहीं हुआ और अधिकांश स्थानों पर उदय में चतुर्दशी देखकर 29 मार्च को हाटकेश्वर जयंती मनाई गई, जो हमें शास्त्रीय दृष्टि से अनुचित और असंगत प्रतीत हो रही है।

उपर्युक्त संदर्भ में सर्वप्रथम हमारा मानना है कि हाटकेश्वर जयंती वैष्णवों का पर्व नहीं है, यह तो शिवरात्रि के समान शैव पर्व है। अतः वैष्णव पर्वों के समान सूर्योदय काल में चतुर्दशी देखकर उदया तिथि ग्रहण कर 29 मार्च को यह पर्व मनाना अनुचित और असंगत प्रतीत होता है। 29 मार्च को चतुर्दशी उदय तिथि तो थी किंतु पूर्वान्ह में ही समाप्त हो रही थी, दूसरे शब्दों में कहें तो 29 मार्च को चतुर्दशी अपरान्ह काल से पूर्व ही समाप्त हो गयी थी और फिर पूर्णिमा लग जाने से पूर्णिमा युक्त हो गयी थी। मात्र उदयकाल व्यापिनी चतुर्दशी, हाटकेश्वर जयंती के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः 29 मार्च को हाटकेश्वर जयंती मनाना अनुचित प्रतीत हो रहा है।

शास्त्रकारों ने चैत्र शुक्ल चतुर्दशी के संबंध में पर्याप्त विचार किया है। स्कंध पुराण में जो नागरों के विषय में बहुत सी जानकारी देता है, इस पुराण में आलोच चतुर्दशी के विषय में उल्लेख है- चतुर्दशी तु कर्तव्या त्रयोदश्या युता विभो। अर्थात हे विभो! त्रियोदशी से युक्त चतुर्दशी करनी चाहिए। इससे यह स्पष्ट है कि चतुर्दशी, त्रयोदशी से युक्त ग्राह्य है, पूर्णिमा से युक्त नहीं। 29 मार्च को पूर्णिमा से युक्त चतुर्दशी थी इसलिए वह ग्राह्य नहीं थी और 28 मार्च को त्रयोदशी युक्त चतुर्दशी थी जो शास्त्रानुसार ग्राहय थी। ब्रह्मवैवर्तपुराण तथा महाभारत में भी स्कंधपुराण जैसी ही बात कही गयी है। महर्षि बोधायन ने भी हेमाद्रि में इस बात को कुछ इस प्रकारकहा है - मधोः श्रावणमासस्य शुक्ला या तु चतुर्दशी सा रात्रि व्यापिनी ग्राह्या। अर्थात चैत्र (मधोःञ और श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि रात्रि व्यापिनी ग्रहण करनी चाहिए। रात्रि व्यापिनी चतुर्दशी 28 मार्च को थी न कि 29 मार्च को।

धर्मसिन्धुकार चैत्र शुक्ल चतुर्दशी के विषय में लिखते हैं- अथचतुर्दश्यांनृसिंहहस्य दोलोत्सवः अत्रैवश्रीशिविस्वैकवीराया-भैरवस्य च दमनकैः पूजनं अत्रचतुर्दशी पूर्वबिद्धापराह्नव्यापिनी ग्राह्या अपरान्ह व्याप्तभावेपराह्न स्पर्शिन्यपिपूर्वा ग्राह्या तदभावे पराग्राह्या। अर्थात चैत्र शुक्ल चतुर्दशी में नृसिंहजी का दोलोत्सव करना चाहिए, इसी चतुर्दशी के दिन महादेवजी, एक वीरादेवी और भैरव की दमना करके पूजा करनी चाहिए। यहां चतुर्दशी अपरान्ह काल व्यापिनी पूर्वबिद्या लेनी चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें तो अपरान्ह काल व्यापिनी चतुर्दशी पूर्वबिद्धा अर्थात पूर्व तिथि त्रयोदशी से युक्त लेनी चाहिए। अपरान्ह काल व्यापिनी पूर्वाभिद्या चतुर्दशी 28 मार्च को थी 29 मार्च को नहीं। यदि कभी अपरान्ह में चतुर्दशी न हो तो अपरान्ह का स्पर्श करने वाली भी पूर्वबिद्या अर्थात त्रयोदशी से युक्त ही चतुर्दशी लेनी चाहिए, इसके अभाव में परबिद्या लेनी चाहिए इसलिए जब 28 मार्च को पूर्वबिद्या मिल रही थी तो 29 मार्च को परबिद्या को ग्रहण करना सर्वथा अनुचित प्रतीत हो रहा है।

उपर्युक्त विवेचना से यह निष्कर्ष निकलता है कि हाटकेश्वर जयंती उदया तिथि के आधार पर नहीं मानना चाहिए। यह अपरान्हकाल व्यापिनी चतुर्दशी, जो पूर्वबिद्या अर्थात पूर्व तिथि त्रयोदशी से युक्त हो, ऐसी चतुर्दशी के दिन ही मनानी चाहिए। इस वर्ष 28 मार्च को अपरान्ह व्यापिनी पूर्वबिद्या चतुर्दशी थी इसलिए 28 मार्च को ही हाटकेश्वर जयंती मनाना धर्मशास्त्री दृष्टि से समीचीन था। 29 मार्च को चतुर्दशी उदया थी और परबिद्या थी अर्थात मात्र उदयकाल व्यापिनी और परातिथि पूर्णिमा से युक्त थी, पूर्णिमा अपरान्ह में ही आ गयी थी। अतः 29 मार्च को हाटकेश्वर जयंती किसी भी प्रकार से समीचीन नहीं थी। वैसे भी शिवार्चन का समय अपरान्ह से लेकर रात्रि पर्यंत तक अधिक उचित माना गया है। अतः अपरान्ह व्यापिनी चतुर्दशी ही हाटकेश्वर जयंती के लिए उचित प्रतीतहोती है जो 28 मार्च को थी। इसी दिन हाटकेश्वर जयंती मनाना उचित था, किंतु अधिकांश स्थानों पर 29 मार्च को हाटकेश्वर जयंती मनाई जो अनुचित और असंगत प्रतीत होती है।'गतम् न सोचामि कृतम् न मन्ये।' अब जो हो गया सो हो गया। आगे से ध्यान रखने की आवश्यकता है। हमारे जातीय संगठनों और पत्र-पत्रिकाओं का भी ये दायित्व बनता है कि वे ऐसे जटिल अवसरों पर धर्मशास्त्रीय निर्णय लेकर प्रचारित-प्रसारित करें, जिससे सामान्य जातीय जन भ्रमित न हों और उचित समय पर अपने पर्वों को मना सकें।

डॉ. नटवर नागर, डी. लिट्
539, बिहारी पुरा, गली सेठ भीकचंद मथुरा (उ.प्र.)
मोबा. 9219795519

आचार्य पं. सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ)

हस्तरेखा विशेषज्ञ, वास्तुविद्, कुंडली मिलान

(ज्योतिष विद्या से बतायें भविष्य फल का आधार श्रद्धा व विश्वास है।)

10, बीमानगर, खजराना रोड़, इन्दौर फोन 3097990, मो. 9425963751

संसार में रहने की कला

हमारा जीवन है दूसरों के लिए

संसार में रहना एक कला है। उस कला को हम ठीक से समझ लें और काम में लायें तो बेड़ा पार है।

दूसरों का जो-जो व्यवहार प्रतिकूल प्रतीत होता है, ऐसे व्यवहार से बचो, क्योंकि तुम मनुष्य हो। मनुष्यों में कर्त्तव्य-प्रवृत्ति की प्रधानता होती है। यह कर्त्तव्य प्रवृत्ति ही स्वार्थ-मोह से आपको ऊपर उठायेगी। दूसरा कोई उपाय स्वार्थ-मोह से ऊपर उठाने के लिए नहीं है। माता के प्रति कर्त्तव्य है- पिता के प्रति कर्त्तव्य है, पति के प्रति कर्त्तव्य है, पत्नी के प्रति कर्त्तव्य है आदि-आदि। कर्त्तव्य का ऐसा स्तर उसके जीवन में है, जिसको मनुष्य ही समझ सकते हैं, पशु पक्षी नहीं समझ सकते।

संसार में हमारा जन्म ऋणानुबंध से हुआ है। संसार के जितने संबंधी हैं, सबका बदला आप पर है। वह बदला चुकाना है। हृदय में संसार के प्रति उदार भाव रखो। मनुष्य शरीर का उद्देश्य विषय-भोग करना, संसार का सुख लेना नहीं है, प्रत्युत सबकी सेवा करना है। इसलिए सबको सुख कैसे पहुंचे, सबको आराम कैसे पहुंचे, सबका भला कैसे हो- यही चिंता करो, यही विचार करो। ' ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूत हित रताः ।' (गीता /2/14)

दूसरों के हित के लिए हम कितना कर सकते हैं- इसका कोई ठेका नहीं है। आपकी रति, रुचि, प्रीति, दूसरों के हित में हो। 'परहित बस जिन्ह के मन माहीं। तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कुछ नाहीं। (मानस अरण्य 31/1), जिनके हृदय में दूसरों के हित का भाव रहता है, उसके लिए कुछ भी करना बाकी नहीं रहता। कामना रहित होकर दूसरों के लिए कर्म करने में ही मनुष्य जीवन की सफलता है। भगवान कहते हैं कि मैं तो देता रहूंगा। अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा मैं करूंगा 'योग क्षेमं वहाम्यम्' (गीता 1/22) परंतु तू चाहना मत करना। 'निर्योगक्षम आत्मवान् भाव' (गीता 2/45)

अपने सुख की किञ्चतमात्र की इच्छा न करें। अगर वह अपने सुख की इच्छा करता है, तो उसको संसार में रहना आया नहीं। अतः अपनी चाहना तो रखें नहीं और दूसरों की न्याययुक्त चाहना अपनी शक्ति के अनुसार पूरी कर दें तो हम स्वाधीन (मुक्तञ हो जाएंगे। यही गीता का कर्मयोग है। अपने लिए कुछ भी करेंगे और कुछ भी चाहेंगे तो योग नहीं होगा, प्रत्युत भोग होगा तथा कर्मों से बंधन होगा।

'कर्मणा बध्यते जन्तुः' (गीता)

सीधी सादी बात यह है कि अगर आप घर में रहते हैं तो घर में रहने की कला तो सीख लें। बड़ी. सीधी-सरल कला है। अगर आप सास हैं तो बहू-बेटों के लिए मैं सास और माँ हूं, वे मेरे लिए नहीं हैं। आप बहू हैं तो सास-ससुर के लिए मैं हूं, वे मेरे लिए नहीं हैं। आप पति हैं तो पत्नि के लिए मैं हूं वह मेरे लिए नहीं है। यह एक धारणा आप कर लो कि उनके लिए मैं हूं, वे मेरे लिए नहीं है। वे मेरे लिए हैं- यह भाव भीतर से मिटा दो तो आपकी खट-पट मिट जाएगी। यह घर में रहने की, संसार में रहने की असली कला है।

मेरे लिए गुरु नहीं, मैं गुरू के लिए हूं। मेरे लिए पिता नहीं, मैं पिता के लिए हूं। मेरे लिए पुत्र नहीं मैं पुत्र के लिए हूं। साधु हैं तो हमारे लिए गृहस्थ नहीं है, हम गृहस्थ के लिए हैं। वे हमारे लिए नहीं, हम उनके लिए हैं- इतनी सी बात है। यह बात छोटी-सी है, पर महान लाभ देने वाली है। अगर आपकी नियत प्राणीमात्र का हित करने की है तो आपका बंधन नहीं होगा। 'मन एवं मनुष्याणां कारवां बंध मोक्षयोः' शरीर को संसार की सेवा में समर्पित कर देना 'कर्म योग' है। और संसार से सुख चाहना 'जन्म-मरण' योग है।

कर्म योगी वही होता है, जो किसी भी परिस्थिति आये, उसका उपयोग केवल दूसरों के हित के लिए करता है। सेवा करने का अर्थ है- दूसरों का हित (कल्याण) हो और प्रसन्नता हो। धन आदि से सेवा करने पर अभिमान होता है, तिरस्कार होता है। सेवा करने के लिए हमारे पास न तो धन है, न बल है, न बुद्धि है, न योग्यता है, न सामर्थ्य है, कोई भी सामग्री हमारे पास नहीं है, पर हम सेवा करना चाहते हैं तो कैसे करें? पर 'दुःख-सुख, सुख-सुख देखे पर' मानस (7/38/1) दूसरों के दुःख से (हृदय से) सुखी (प्रसन्न) हो जाएं तो यह आप की बड़ी भारी सेवा होगी। यह सेवा आप बिना रुपए-पैसे के बिना बल के, बिना त्यागी के कर सकते हैं। अतः सेवा के लिए सामग्री की जरूरत नहीं है, हृदय की जरूरत है। संपूर्ण सांसारिक कामनाओं की पूर्ति करने की सामर्थ्य किसी में नहीं है, पर कामनाओं का सर्वथा त्याग करने की सामर्थ्य सभी में है। अतः मनुष्य कामनाओं का सर्वथा त्याग कर सकता है। गीता में भगवान मनुष्यमात्र को निष्काम भावपूर्वक परहितार्थ कर्म करने की आज्ञा देते हैं- योगस्थः कुरु, कर्माणि संगं त्यक्ता धन अञय। सिद्धया सिद्धयोः समोभूत्वा समत्वं योग उच्यते।। (गीता 2/48) संसार से सुख न चाहें, प्रत्युत सुख देते रहें तो हमें संसार में रहने की कला आ गई, हम मुक्त हो गये। हम सुखी हो गए।

संकलन
सूर्यकांत पौराणिक
श्री आरोग्य निकेतन, भौंरासा (देवास) म.प्र.

की आवाज जय हाटकेश वाणी आप अभी तक सदस्य बनें या नहीं? आकर्षक रुचिकर उपयोगी तीनों विशेषताओं से परिपूर्ण

सदस्यता आवेदन पत्र

मैं.....

पूरा पता (पिनकोड सहित).....

.....

.....

मासिक जय हाटकेश वाणी का तीन वर्ष हेतु सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित शुल्क 250/-रु. नगद/चैक/ ड्राफ्ट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते पंजाब नेशनल बैंक A/c नं. 0212002100245085 में जमा किया है।

श्रीमान संपादक महोदय
मासिक जयहाटकेश वाणी
20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर
फोन-0731-2450018, 0731-2459026
मो.94250-63129, 98260-95995, 99262-85002
Email-manibhaisharma@gmail.com
jayhotkeshvani@gmail.com

पुण्य स्मरण २२ मई को विशेष

सच्चे देशभक्त स्वतंत्रता सैनानी श्री नंदलालजी व्यास

महात्मा गांधी तथा स्व. श्री लालबहादुर शास्त्री जैसे देश के दो महान सपूतों के साथ जिनका जन्मदिन जुड़ा हो वे हमारे नायक स्व. श्री नंदलालजी व्यास हमारे बीच नहीं हैं, किंतु उनकी निष्ठा, कर्मठता, दृढ़ता, ईमानदारी, निराभिमानता, निर्भयता और स्वजनों के प्रति अद्वितीय आत्मीयता हमारी मार्गदर्शक है। राऊ निवासी स्व. श्री गेंदालालजी हलवाई के सुपुत्र श्रीनंदलालजी व्यासका जन्म 2 अक्टूबर 1915 में अपने मामा के घर उज्जैन में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गुरुकुल महाविद्यालय, वृंदावन में हुई दुर्भाग्य से अस्वस्थ हो जाने के कारण अपना अध्ययन अधूरा छोड़ना पड़ा। श्री व्यास का बचपन गुरुकुल में ही बीता और यहां से इन्हें राष्ट्रीयता की भावना प्राप्त हुई। फलतः गुरुकुलीन पूर्णतः ग्रहण न कर ये गुप्त रूप से क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे। इसके बाद बापू का नमक सत्याग्रह विदेशी वस्त्र का बहिष्कार आदि से प्रभावित होकर सन् 1931 में खादी पहनने की प्रतिज्ञा की ओर कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की।

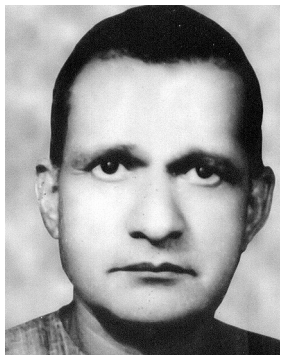

कुछ महापुरुष दूसरों के लिए ही जन्म लेते हैं और सारा जीवन लोक हित में समर्पण कर देते हैं। श्री व्यास इन गिने हुए त्यागी एवं तपस्वियों में से एक थे। श्री व्यास ने 1931 से 1947 तक सारा जीवन स्वतंत्र आंदोलन में एक क्रांतिकारी और एक गांधीवादी के रूप में लगाया। अंग्रेजों से सीधा मुकाबला करते रहे।

अगस्त 42 के आंदोलन में देश के समस्त बड़े नेता जेल भेज दिये गये। इंदौर में विद्यार्थियों द्वारा पत्थरबाजी, तोड़फोड़ आदि की कार्यवाही भी जारी थी। इन्हीं दिनों श्री व्यास तथा श्रीधर पाठक ने रेल के तार काटने एवं रेलगाड़ियां गिराने के कार्यक्रम तैयार किये। 12-13 अगस्त 1942 को इन दोनों सेनानियों ने राऊ स्टेशन से एक मिल दूर पिडवाई गाँव के पास रेलवे लाईन के किनारे लगे टेलीफोन खम्बों पर श्री व्यास पिन्चिस लेकर चढ़े और तार काटकर नीचे गिरे। उस समय तारों की रक्षा के लिए नियुक्त गोरे सैनिकों के दल ने इनका पीछा किया, परंतु ये गोरे सैनिकों के निशानों से बाल-बाल बच गये। इस घटना के बाद श्री व्यास ने तार काटने का स्वयं बीड़ा उठाया। ग्रीस का डिब्बा लेकर गोरों की स्पेशल ट्रेन जो मऊ इंदौर के बीच चलती थी, को गिराने हेतु ग्रीस को रेलवे लाईन पर डाल रहे थे। इस बीच सैनिकों का दल आ गया और इन्हें अपने प्राण रक्षा करने हेतु भागना पड़ा। इस प्रकार 29 अगस्त 1942 तक तार काटने का इनका क्रम जारी रहा।

जिन्होंने राष्ट्र के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया हो। उनका परिवारिक जीवन अपना स्वयं का नहीं होता था। श्री व्यासजी ने परिवार के रूप में क्या खोया क्या पाया एक बड़ा प्रश्न वाचक चिन्ह वैसा ही रहा जैसा गांधी व शास्त्री के सामने रहा वही श्री व्यास का।

शाजापुर के स्वर्गीय पत्रकार श्री शंकर गुरु की बहन गीताबाई (प्रभादेवी व्यास) से आपका द्वितीय पाणिग्रहण हुआ। सौ. प्रभादेवी ने भी कंधे से कंधा लगाकर इनका साथ दिया। राऊ ग्राम में ग्रामीण मंडल की स्थापना करके ग्रामीण महिलाओं में रचनात्मक कार्य जारी रखा।

आपने सन् 1941 में राऊ में जागीर के कष्टों को मिटाने के लिए जागृति पैदा की व जागीरी प्रजा मंच के नाम से संगठन स्थापित किया। फलस्वरूप जागीरदार ने इनके पैतृक मकान, जमीन व वृत्ति देने स्थान की जमीन इनसे छीन ली। 1942 के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण इंदौर तहसील के गांवों में संगठन आंदोलन चलाया। फलस्वरूप डी.आई. आव. 38 के अंतर्गत 8 माह का कारावास व 2 माह विचाराधीन बंदी और इस प्रकार 10 माह की कैद हुई। आपसे माफी मांगने की अधिकारियों ने पेशकश की, परंतु आप अडिग रहे व क्षमा नहीं मांगी।

आपने सन् 1943 से 1948 में जेल से छूटने के बाद मध्य भारत हरिजन संघ के प्रचार का कार्य किया। सन् 1948-49 में इंदौर कांग्रेस शरणार्थी समिति तथा इंदौर के अखिल भारतीय चरखा संघ से संबंधित खादी भंडार में भी कार्य किया। श्री व्यास सन् 1944 से 1948 तक राऊ ग्राम प्रजा मंडल तथा 1941 तक जागीरी प्रथा संघ राऊ के अध्यक्ष रहे। सन् 1945-46 में इंदौर जिला प्रजा मंडल के अध्यक्ष रहे तथा सन् 1945 से 48 की अवधि से इंदौर कांग्रेस कमेटी के मंत्री व प्रधानमंत्री तथा 1947 से नागरिक स्वाधीनता समिति के सदस्य रहे। श्री व्यास अंततः 1956 में भोपाल आकर स्थाई निवासी बन गये। आप सत्ता की राजनीति से दूर रहे। प्रादेशिक कांग्रेस कार्यालय में एक नीतिज्ञ के रूप में निरपेक्ष एक कर्मठ कार्यकर्ता की तरह काम करते रहे। निरंतर जूझते रहने से अंततः 22 मई 1981 को उनकी हृदयगति रुकने से आकस्मिक निधन हो गया। स्वतंत्रता की रजत जयंती पर मध्यप्रदेश शासन ने 19 अगस्त को वल्लभभवन में प्रशस्ति-पत्र एवं इंदौर शहर कांग्रेस कमेटी द्वारा शहर कांग्रेस की ओर से सम्मान पत्र भेंट किया। भारत सरकार ने स्व. श्री व्यास को ताम्र पत्र भेंट कर सम्मानित किया। आपकी सेवाओं से नागर समाज कैसे वंचित रह सकता था।भोपाल में जीवन के अंतिम वर्ष तक नागर परिषद के कोषाध्यक्ष का काम श्री व्यासजी करते रहे। आदर्श पर चलना, तलवार की धार पर चलना होता है। श्री व्यासजी सारा जीवन उस तलवार की धार पर चलते रहे। श्री व्यास के व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन नागर समाज के लिए एक आदर्श है।

प्रस्तुति श्री वल्लभदास मेहता
भोपाल

पगड़ी रस्म में प्राप्त राशि दान में दी

ब्यावरा। स्व. श्रीमती यशोदाबाई नागर के उत्तरकार्य 'पगड़ी रस्म' में समाजबंधुओं एवं इष्टमित्रों से प्राप्त राशि 2100 रु. नागर परिवार ने मुक्तिधाम निर्माण हेतु दान कर दी। इस अनुकरणीय पहल के साथ ही लायन प्रथा बंद करने तथा ससुराल पक्ष द्वारा दी जाने वाली प्लेटें तथा साड़ी भी अस्वीकार कर रूढ़ीवादी प्रथाओं को बंद करने की पहल की गई। नागर परिवार के इस प्रयास की सर्वत्र सराहना हुई।

प्रस्तुति शारदा देवी मुरलीधर नागर
छापीहेड़ा

पुण्य स्मरण

श्री रामवल्लभजी नागर का देहावसान

उज्जैन। वरिष्ठ पत्रकार एवं भोपाल दूरदर्शन के उपनिदेशक विनोद नागर के पिता

रामवल्लभ नागर (79) का निधन 22 अप्रैल को हो गया। राय प्रशासनिक सेवा से उपसचिव के पद से सेवानिवृत्त हुए श्री नागर ने उज्जैन, बड़नगर, मंदसौर, मनासा और धार में तहसीलदार एवं डिप्टी कलेक्टर के पदों पर सेवाएं दीं। वे उज्जैन में लोकायुक्त की संभागीय समिति के सदस्य भी रहे।

श्रद्धांजलि -श्रीमती आनंदीबाई रावल

रतलाम। अलकापुरी निवासी श्री दुर्गाशंकर रावल की धर्मपत्नी श्रीमती आनंदीबाई रावल का 86 वर्ष की आयु में दिनांक 19अप्रैल 2010 को निधन हो गया। उनके निवास से निकली अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में नागर समाज एवं गणमान्यजनों ने सम्मिलित होकर श्रद्धांजलि अर्पित की। जवाहर नगर मुक्तिधाम पर मुखाग्नि उनके पुत्र ओम प्रकाश, पुष्पक रावल एवं कृष्णकांत रावल ने दी। श्रीमती आनंदीबाई रावल धार्मिक एवं समाज हितैषी कार्यों में संलग्न रहते हुए मृदुभाषी व मिलनसार महिला थीं। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर इस संसार से विदा हुईं।

पुण्य स्मरण

वैशाख कृष्ण एकादशी

श्रीमती रामप्यारी देवी नागर

हृदय की गहराइयों से

श्रद्धांजलि

समस्त परिवार एवं जय हाटकेश वाणी परिवार

जाने वाले फिर नहीं आते
जाने वाले की याद आतीहै

श्रीमती शशिकला जोशी

द्वितीय पुण्य स्मरण
1 मई 2010

श्रद्धानवत -**जोशी परिवार, उज्जैन**

एक विश्वास-एक दृढ़ संकल्प
एक सिद्धांत... एक आदर्श
आपका व्यक्तित्व आज भी हमारे
जीवन के लिए प्रेरणा स्त्रोत है

स्व. पं. श्री रामकृष्णजी नागर

7 मई 1998

श्रद्धानवत-
श्रीमती मनोरमा नागर
अनुज- हरिनारायण नागर
पुत्रगण - दुष्यंत, रमेशचंद्र, ललित, भूपेन्द्र, प्रकाश एवं मनमोहन नागर

२१वां पुण्य स्मरण

गौरजी महाराज

पं. बापूलालजी शर्मा (नागर)

दिनांक 11-04.1989

-श्रद्धानवत-
पं. रामचंद्र शर्मा सौ. बिरजूबाई
डॉ. रामरतन शर्मा सौ. सुमित्रा शर्मा
फोन -0734-2516603

आठवीं पुण्यतिथि

श्रीमती चिंतामणी द्वारकाप्रसादजी मेहता

दिनांक 1 मई 2002

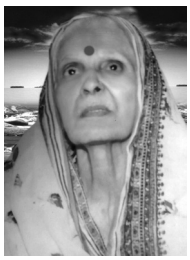

जिसकी गोद में हमने जीवन पाया, जिसकी पलकों की छांव में हमने बचपन बिताया

ऐसी ममतामयी माँ को प्रणाम

समस्त मेहता परिवार

पुण्य स्मरण ११ मई

श्रीमती ललिता देवी मेहता

रतलाम। उनकी शिक्षा और स्वभाव आज भी प्रासंगिक। करोड़ों जन्मों के पुण्यों का फल जब उदय होता है तब किसी आत्मा के मोक्ष का द्वार खुलता है। ऋषि-मुनि हजारों वर्ष तपस्या करके भी वह गति नहीं पा सकते जो पुण्यात्मा को सहज ही अपने कर्मों के फलस्वरूप मिल जाती है। ऐसी ही पुण्यात्मा थी मेरी सासु माँ मातृतुल्य स्व. श्रीमती ललिता देवी (धर्मपत्नी स्व. श्री लक्ष्मीकांतजी मेहता)। हजारों आशाओं और उम्मीद के साथ आपने जीवन के प्रारंभिक दौर से ही कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने पति के साथ विभिन्न स्थानों पर रहे फिर रतलाम में आकर बसे। यहां उन्हें सास-ससुर, जेठ-जेठानी, भतीजे-भतीजियों से भरा परिवार मिला। हर माँ की तरह अपने चार पुत्रों, दो पुत्रियों को अच्छे संस्कार दिए। मुसीबतों के बावजूद परिवार का उचित प्रबंध पैसों का सही उपयोग करना वे कहती थीं कि पैसा कमाने से ज्यादा जरूरी है फिजूलखर्जी रोकना तथा बचत करना। पैसा बचाकर रखने की उनकी प्रवृत्ति के चलते उनके देहावसान के पश्चात उनकी पेटी से इतना पैसा निकला कि उनके उत्तर कार्य के बाद शेष बची राशि से बर्तन खरीदकर नागर समाज रतलाम को भेंट किए गए। एक ही बात का दुःख है कि हम उनके प्यार से वंचित रहे, लेकिन उनका आशीर्वाद हमारे साथ है। उनकी अच्छी बातें एवं सदव्यवहार के बारे में मुझे अपने पति से मालूम पड़ा। उन्होंने अपने प्राण भी तीर्थयात्रा के दौरान त्यागे। बद्रीनाथ यात्रा के समय जोशीमठ में उन्होंने शरीर त्यागा तथा वहां के शंकराचार्यजी ने अपने शिष्यों को भेजकर अंतिम संस्कार की व्यवस्था करवाई वे आज भले ही हमारे बीच नहीं हैं, परंतु उनकी शिक्षा और स्वभाव आज भी प्रासंगिक है, समस्त परिवार नतमस्तक हो उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

सौ. बिंदु प्रदीप मेहता
मो. 94240 84744

'प्रभावशाली शब्दों से बदलें अपना जीवन

समय परिवर्तनशील है और बलवान भी है यह एक बड़ा सच है। इस सांसारिक परिवर्तनशीलता में हमारी सोच में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक है- सही दिशा और दशा मिलने पर अपनी सोच के अनुसार हमारा जो लक्ष्य अपने जीवन में बना रखा है उसे प्राप्त करने में किसी हद तक सफल होते हैं, जिसके फलस्वरूप हम कितने योग्य हैं और कितनी योग्यता हम रखते हैं उससे परिचित होते हैं। योग्य व्यक्ति अपनी योग्यता से ही जीवन की हर प्रतिस्पर्धा में प्रतिभागी बनकर लक्ष्य हासिल करता है- परंतु इस परिवर्तनशील समय में अधिकांश व्यक्ति जोड़-तोड़ और होड़ में बने रहकर लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर होने का दम भरते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति हमेशा योग्य व्यक्तियों का हक छीन कर अपने में संतुष्ट होते रहते हैं और हमेशा मैं... मैंने... मेरा ही अपनी सफलता मानकर सोचते हैं मैं भी किसी से कम नहीं हूं। ऐसे व्यक्तियों की सोच का तुलनात्मक दृष्टि से एनालिसिस किया जाये तो वे योग्य व्यक्ति से हमेशा अलग ही श्रेणी में गिना जाएगा- इस श्रेणी को यदि हीनता की संज्ञा दी जाए तो उपयुक्त रहेगा।

यहां एक प्रासंगिक उदाहरण से उपर्युक्त कथन सफलता से समझा जा सकता है- कुछ प्रभावशाली शब्दों को उदाहरण के दौर पर समझकर अपनी सोच को प्रगतिशील बनाया जा सकता है। ये शब्द हैं-

छः प्रभावशाली शब्द
मैं मानता हूं मैंने गलती की
पाँच प्रभावशाली शब्द
आपने अच्छा काम किया।
चार प्रभावशाली शब्द
आपका क्या विचार है
तीन प्रभावशाली शब्द
यदि कृपा हो
दो प्रभावशाली शब्द
आपका धन्यवाद
एक प्रभावशाली शब्द - हम
और सबसे हीन शब्द 'मैं'

उपर्युक्त छह शब्दों का आशय समझने पर ही व्यक्ति जोड़-तोड़-होड़ और मैं-मैंने... मेरा की सोच से उभरकर अपने अंदर के मैं का विसर्जन कर सकता है। आशय यह है कि व्यक्ति उपर्युक्त छह शब्दों का आशय समझकर अपने जीवन प्रबंधन की सोच का शुभारंभ कर सकता है।

महेश्वर मंडलोई
रिटायर्ड सीनियर मैनेजर
बीएचईएल, भोपाल
300, सेक्टर-2 शक्ति नगर, बीएचइएल, भोपाल
फोन-0755-2458114

९ मई मातृ दिवस के अवसर पर विशेष

जीवंत संवेदनाओं की प्रतीक 'माँ'

माँ एक शब्द ही नहीं, अपितु जीवंत संवेदनाओं का प्रतीक है। माँ इस परम पावन सम्बोधन से ही नारी की पूर्णता सिद्ध होती है। इस पवित्र ध्वनि उच्चारण मात्र से मन अद्भुत शांति, पवित्रता और श्रद्धा के दिव्य भावों से परिपूर्ण हो जाता है।

माँ-इस पद की इतनी गरिमा है कि स्वयं परब्रह्म परमात्मा भी इसे प्राप्त करने के लिए जगजननी जगदम्बा का रूप धारण करते हैं और समस्त सृष्टि को जन्म देते हैं।

माँ बालक को मात्र अपना पयःपाव कराकर उसे पोषित ही नहीं करती, अपितु उसके पास उपलब्ध जो कुछ भी सर्वश्रेष्ठ है, उसे अपने बालक में समाहित करना चाहती है। माँ के अपने संस्कारों और परिवेश का संतान पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

माँ में प्राकृतिक रूप से ही कोमलता, सुकुमारता, त्याग, प्रेम, आत्मसमर्पण, स्नेह, करुणा, सहनशीलता वात्सल्य भाव के आधिक्य से ही वह अपने नवजात शिशु का पालन पोषण और उसकी देखभाल और स्नेह से पुरुष की अपेक्षा अधिक ममता करती है। वह अपने सहज दुःख को भूल जाती है और निरंतर पुत्र एवं पुत्री की सेवा में तत्पर रहती है। उसका मातृ हृदय सदा स्नेह से भरा रहकर शिशु को स्नेहपान कराता रहता है। माता के उदात्त गुणों का प्रभाव शिशु पर जीवनभर पड़ता है। इन्हीं गुणों को आत्मसात कर आगे चलकर मनुष्य अपने जीवन को ऊंचा उठाकर मानवता की प्रतिष्ठा करता है। माता का तपस्विनी का जीवन होता है।

हम सब पर माता के अनंत उपकार हैं। माता स्नेह, वात्सल्य, क्षमा और प्रेम की साक्षात प्रतिमा है। पृथ्वी पर साक्षात, ईश्वर का ही रूप है। भला माता-पिता के ऋण से भी क्या कोई उऋण हो पाया है?

मनु स्मृति में लिखा है-

उपाध्यायत्दशाचार्य, आचार्याणां शतं पिता।
सहस्त्रं तु पितृन माता, गौरवेणाति रिच्यते।।

अर्थ- दस उपाध्यायों से आचार्य, सौ आचार्यों से पिता और दस हजार पिताओं से माता का पद अधिक गौरवशाली है। हमारी भारतीय संस्कृति का उच्च नैतिक आदर्श है कि माता,पिता, गुरु तथा सभी श्रेष्ठजन सदा ही वंदनीय, पूजनीय तथा संवेदनीय है। माता-पिता में देववत् बुद्धि रखना परम धर्म है।

माता परिवार की समृद्धि के लिए लक्ष्मी, संतान को संस्कारित करने के लिए माँ सरस्वती और बुराइयों को दूर करने के लिए दुर्गा की भूमिकाएं निभाती है।

माँ वात्सल्य की प्रतिमूर्ति है। मातृत्व की भावना उसकी जन्मजात प्रवृत्ति है। पुत्र को शिक्षा देने हेतु सन्मार्ग पर लाने हेतु माँ मारती भी है। पर उसकी मार में प्यार होता है बदले की भावना नहीं। पुत्र को सन्मार्ग पर लाना चाहती है। वैसे पुत्र को दंडित करके माँ भी बहुत दुःखी होती है।मर्यादा महाकाव्य 'रामचरित मानस' के रचयिता संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है-

मातृ पिता गुरु प्रभु के बानी। विनहिं विचार करिअ सुभजानी।।

पुत्र को बिना तर्क किये, कल्याणकारी जानकर सदैव माता-पिता व श्रेष्ठजनों की प्रत्येक आज्ञा का पालन करना चाहिए। उनकी तन-मन-धन से सेवा करके प्रसन्न रखना पुत्र का परम कर्त्तव्य एवं धर्म है।

प्रस्तुति- गोवर्धनलाल व्यास, ऋषि नगर उज्जैन

उनका निश्छल प्रेम और सद्कार्य अमर हो गए हैं

सद्व्यवहार, संस्कारों को जीवंत बनाकर जीने वाले अपनत्व व आदर्शों के ज्योतिपुंज्य स्व. बेन (रिश्ते में बुआजी सा.) को पुण्य स्मरण के साथ विनम्र श्रद्धांजली

उनके प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, सद्भावना, कर्त्तव्यनिष्ठ, सत्य संकल्प से समाज एवं राष्ट्र को दिव्य प्रेरणाएं प्राप्त हुई हैं। स्व. बेन का जीवन पर्यंत घर, परिवार से लेकर हर परिचित, समाज तक सबके साथ एक वंदनीय आदर्श व्यवहार बना रहा। उनसे जो भी मिला उसे उनके अपनेपन के मधुर स्वभाव का अहसास पुण्य स्मरण है। समाजजन-स्नेह स्वजन, रिश्तेदारों से स्व. बेन के पंचभौतिक शरीर को विदा हुए 1 वर्ष से अधिक हो गया, किंतु करुणा, प्रेम, भावना की मूर्ति को कोई भी कैसे भूल पाएगा। जिसने उन्हें जाना है उनके लिए वे आदर्श हैं।

उनके गहन व गंभीर विचार अपनेपन से भरा हंसमुख व्यवहार, उनकी जीवनशैली व अंदाज से दुःख, शोक क्लेश भाग जाया करते थे। उनमें वातावरण व रिश्तों को हमेशा खुशनुमा, गरिमामय, संवेदनशील व ताकतवर बनाए रखने के मौलिक गुण थे। उनकी सोच हमेशा निर्मल व समाज हित की रही। समाज हित में उनके द्वारा किये गये कार्य, दुःख दर्द में सहयोग, सहानुभूति, उनके प्रेम की झलक मार्गदर्शन, प्रेरणाएं अविस्मरणीय हैं।

पारिवारिक, सामाजिक सरोकारों के प्रति उनकी सेवा, समर्पण, संस्कार अतुलनीय है। उन्हें परिवारों के टूटने पर गहरा दुःख व संवेदनाएं महसूस होती थीं। उनके इन भावों को कोई भी व्यक्ति सरलता के साथ आसानी से पढ़ सकता था। महानगर में रहते हुए भी उन्होंने अपने देशज संस्कारों को गढ़ा और जीवित रखा। इन्हीं संस्कारों की शक्ति से वे सम्माननीय रहीं। अपने आज्ञाकारी पुत्र व पुत्रवधुओं से प्राप्त सम्मान, अधिकारों ऊर्जा से अपने परिवार को संगठित रखा और अपना लक्ष्य तय किया। सामूहिक परिवार रूपी संस्था को कायम रखा और उस पर खरोंच तक नहीं आने दी। और अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। स्व. बेन का महान उद्देश्यों पर आधारित जीवन का वास्तविक महत्व महानता के अर्थों को परिभाषित करता रहेगा।

मानवता के अर्थों-मूल्यों से समाज निर्माण एवं समाज की चेतना को जागरूक बनाने में उन्होंने जो भूमिका निभाई है उसे स्वजनों के साथ समाजजन कभी भी नहीं भूल पाएंगे। नई पीढ़ी को समाज, साहित्य, संस्कृति से परिचय कराने का काम भी उन्होंने जिम्मेदारी के साथ किया। उनके द्वारा संस्थापित हाटकेश वाणी, सामाजिक, सांस्कृतिक, गतिविधियों की पहचान कायम कर हर व्यक्ति, परिवार के लिए प्रेरणास्पद, पथ प्रदर्शन का कार्य कर रही है। नागर समाज की इस मासिक पत्रिका ने राष्ट्रीय स्तर पर देश-विदेश के समाजजनों को संगठित कर विख्यात लोगों से आम लोगों तक चेतना व चेहरे को जोड़ने का काम कर समाज को गौरवान्वित किया है।

उनकी (स्व. बेन) की समाज सेवा, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक जीवन एवं आदर्श उदाहरणों, जीवन पथ में संघर्षों के बीच प्रकाशमान उनके व्यक्तित्व के समक्ष मेरे लिखे सभी शब्द उनके बिना अधूरे-अधूरे, छोटे और सूने दिखाई पड़ते हैं।

बेन में माँ के समान वात्सल्य भाव था- जिसे हम सब परिवारजनों के साथ समाजजनों एवं पूज्य पिताजी (स्व. श्री रामस्वरूपजी नागर) ने भी अनुभव किया था। मैंने अपने परिवार, स्नेह स्वजनों एवं बड़े-बड़े समाजजनों से यह सब (उनके मार्मिक हृदयस्पर्शी संस्मरण) सुना है।

स्व. प्रभाबेन के सदव्यवहार, संस्कार, अपनत्व व आदर्शों को हमारे परिवार ने बहुत ही नजदीक से देखा है। हमारे पिताजी (स्व. श्री रामस्वरूपजी नागर, मेरे अग्रज पं. कमलकिशरजी नागर हाटकेश्वर आश्रम सेमली के पिताश्री) पूज्य स्व. बेन के सगे मामा के पुत्र थे।

संस्मरणीय 60 के दशक की पुरानी बातें आज संक्षेप में कि स्व. पिताजी (स्व. श्री रामस्वरूपजी नागर) उच्च अध्ययन हेतु गांव से इंदौर आए और वे अपने लक्ष्य में कामयाब भी हुए। इस दौरान उनके जीवन संघर्ष, संकट विपदा-कठिनाइयों की घड़ियों में जीवन संघर्षों में जूझ रहे स्व. बेन (स्व. प्रभाबेन) का घर अपनत्व व स्नेह से सना व उनके धैर्य, आशा, उत्साह, जीवटता के लिए संबल व विश्वास की जगह थी। स्व. पिताजी को स्वास्थ्य को लेकर भी गंभीर पीड़ा थी। ऐसे में स्वास्थ्य से लेकर उनकी हर कमजोरी, दुःख अभाव में स्व. बेन का घर शांति एवं चैन की जगह हुआ करता था। जहां उन्हें सुकून मिलता था। बेन भाई के दुःख कष्ट पीड़ाओं को अपनत्व व वात्सल्य के भाव से बांट लेती। कठिनाइयों, जीवन संघर्षों में सुख-दुःखों से दोनों भाई बहनों की खासी पहचान होती रहती। इंदौर आते-रहने पर वे कभी भी स्व. बेन के घर जाना नहीं भूलते। भावों में ऐसी प्रगाढ़ता, मधुरता, सरलता थी कि बेन का सहज सत्कार भावनात्मक क्लेशकारी अभावों को दूर कर देता। बेन का उनके प्रति अगाध भाव था। उनके स्वभाव, विद्वता, व्यवहार से स्व. बेन उन्हें आदरणीय-पूजनीय मानते थे। स्व. बेन से जब भी मिलते उनकी स्मृतियों में बसे वे अनुपम भाव लहराते रहते। उस दशक में उन्हें जानने वाला कौन नहीं जानता कि विपदा, दुःख, पीड़ा, संघर्ष और अभावों की चोट के बीच भी निष्कपट भाव, निश्छल प्रेम, स्नेह के बल पर वे खिलते हुए फूलों की भांति पावन मुस्कानें किस तरह खिलती। उनके मुक्त हास्य की मुस्कान में सबको खुशहाल देखने के ताजगी भरे संदेश छुपे होते। किसने नहीं जाना।

सन् 1977 में पिताजी के देहांत उपरांत भी स्व. बेन का वही आत्मीय लगाव, उसी प्रेम, सद्भाव, स्नेह, अपनत्व, सहयोग का सदव्यवहार हम सभी परिवारजनों के साथ बना रहा और उनके चरित्र की यही महान विशेषता थी कि उनका सबके साथ समान व्यवहार था। हमारी माताजी श्री (स्व. रामप्यारीदेवी) के स्वास्थ्य के प्रति चिंता,

देखभाल, सेवाभाव, कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनका मधुर व्यवहार सदैव स्मरणीय रहेगा।

हम सभी भाई-बहन सहित सम्पूर्ण परिवार स्व. बेन के आत्मीय लगाव, अपनत्व, प्रेम, करुणा, स्नेह, सदव्यवहार, उनके परोपकार, उच्च आदर्शों के प्रति सदैव कृतज्ञ है। उनके ऋणी हैं।

मुझसे पिछले कुछ वर्षों में यदा-कदा जब भी कहीं मिलते हाटकेश वाणी की गतिविधियों का परिचय देते व हाटकेश वाणी के लिए मुझे लेख भेजने का अवश्य कहते। उन्होंने संसार से विदा होने के 7 दिन पूर्व भी मिलने पर मुझसे हाटकेश वाणी के लिए संस्मरण या समाचार, लेख-लिखने भेजने के लिए जोर देकर कहा था- तुम्हारे लेख नहीं आते, तुम लेख भेजा करो।

क्रूर विधाता ने 23 मार्च 2009 को ऐसी ममता की मूर्ति को हमसे छीन लिया। उनके अचानक चले जाने की घटना ने हृदय को झकझोर कर रख दिया। उनके इस तरह चले जाने के यथार्थ को स्वीकार करने के लिए मन तैयार ही नहीं हुआ। मानो वे आज भी जीवंत हैं, उनका प्यार-दुलार आज भी झलक रहा है। मानो झिंझोड़ कर कह रहा हो तुम्हें कहे 1 वर्ष हो गया है-अपनी हाटकेश वाणी में तुम्हारे लेख क्यों नहीं आते, तुम्हें कहा न भेजा करो। कुछ प्रेरणास्पद समाजहित में लिखा करो-भेजा करो।

वे मानो 1 वर्ष पूर्व के उसी प्यार दुलार व भावना के अंदाज में कह रहे हों

अभी रामस्वरूप दादा होते तो कितनी बार आ जाते... आकर प्रभु... ये तेरे... लेख... और ये कल्पना नहीं सच है, हकीकत है वे जीवंत हैं।

उनकी स्मृति में चलाए जा रहे परोपकारी सेवा कार्यों में समाज हित में सेवा सहयोग के रूप में उनके आदर्श प्रेरणा सद्कार्यों को अपनाकर उनके अधूरे सपनों को पूरा करने में सच्चे अर्थों में हम उन्हें 1 वर्ष पूरा होने पर श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

23 मार्च 2009 को उनका 1 वर्ष पूर्व इस प्रकार असामयिक चले जाना हम सब स्नेही स्वजन समाज जन के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उनकी सक्रियता की समाज को आवश्यकता थी। वे अब हमारे बीच में नहीं- किंतु वे हैं आज भी सतकार्यों के रूप में, उनके पग-पग पर किये कर्त्तव्य कर्मों के बोध में, जीवन संघर्षों के बीच व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हुए परिवार, समाज एवं राष्ट्र में अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा, जिम्मेदारियों के निर्वहन में उल्लेखनीय उपलब्धी हासिल कर उनके द्वारा संस्थापित हाटकेशवाणी के ज्ञान दीप बन देश-विदेश में प्रकाशित होने में। हर समाजजन हाटकेश वाणी का आलोकित दीप बनें। सक्रियता से समाज में सहभागी बनें।

स्व. बेन की आत्म ज्योति का आलोक जीवन पथपर मार्गदर्शन करें। उनके आलोक से प्रकाशित मार्ग का अनुसरण कर आत्म कल्याण करें। जीवन रोशन करें। कुछ बातें इतनी असीम, अगाध होती हैं जो सीधे होठों पर, कलम से लेखन में नहीं आती- ऐसे ही अगाध भावों के साथ लेख व जीवन में त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थना के साथ स्व. बेन के प्रथम बरसी पर उनके पावन चरणों में कृतज्ञ भाव से सादर श्रद्धांजलि। स्व. बेन के पावन चरणों में सादर विनम्र श्रद्धांजलि।

पं. राजेश्वर नागर
बेरछी जि. शाजापुर
लेखक सुप्रसिद्ध प्रवचनकार हैं।

लघु कथा

४० से अधिक की आयु फिर मनुष्य की नहीं रहती

यह वृत्तांत सृष्टि की संरचना के आरंभ का है। भगवान हर प्राणी की आयु निश्चित कर रहे थे। अधिकांश प्राणियों की आयु सुनिश्चित करने के बाद अंत में चार प्राणी बचे। मनुष्य, गर्दम (गधा), कुत्ता व उल्लू। वर्ष सिर्फ १६० ही बचे थे, यानी अगर सभी को बराबर बांटा जाता तो हर एक के हिस्से में चालीस वर्ष ही आते।

मनुष्य बड़ा परेशान हो गया, सोचने लगा, चालीस वर्ष की आयु तो बहुत ही कम है। जब तक विवाह होगा, बाल-बच्चे थोड़े बड़े होंगे, मृत्यु आ जावेगी। चारों प्राणियों ने सलाह की, मनुष्य चूंकि बुद्धिमान व चालाक था, अपनी बात अंत में रखना चाहता था। पहले गधा बोला- मैं चालीस वर्ष लेकर क्या करूंगा। मेरा मालिक तो वजन रख-रखकर मेरा जीना दुभर कर देगा। मेरे लिए तो २० वर्ष ही ठीक है। कुत्ता बोला- मेरा जीना भी कोई जीना है। भूख लगती तो भौंको, दरवाजे पर गले में पट्टी डालकर पड़ा रहता हूं। हर कोई दुतकारता रहता है। मेरे लिए भी २० वर्ष ठीक है। सभी जूठा खाना /या बचा-खुचा खाना ही देते हैं। मेरी कोई भी इज्जत नहीं है। उल्लू बोला - मेरा तो बुरा हाल है। उजाले की छोड़ो मुझे तो ठीक से दिखाई भी नहीं देता। कोने में पड़ा रहता हूं, सभी घृणा करते हैं। शरीर पर झुर्रियां पड़ गई हैं। मुझे भी २० वर्ष ही चाहिए।

मनुष्य स्वभाववश सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसे साठ (६०) वर्ष अधिक मिल सकते थे। सभी भगवान के पास फरियादी लेकर पहुंचे। भगवान ने कहा तथास्तु

अब मनुष्य १०० वर्ष की जिंदगी तकरीबन जीता है और -

४० वर्ष (चालीस) अपनी जिंदगी जीता है। यानी मनुष्य की।

२० वर्ष (बीस) यानी ४० से ६० वर्ष तक गधे की जिंदगी जीता है। दिन रात काम में गधे की तरह खटता है। बोझ उठाता है, परिवार का, अपना व अपने जानकारों का। कोड़े खाता है, समाज के, मालिकों के जो शब्दों के होते हैं, तिरस्कार के होते हैं।

२० वर्ष (बीस) यानी ६० से ८० वर्ष तक जीता है कुत्तों जैसी जिंदगी। बचा-खुचा खाता है। घर की चौखट के पास पड़ा रहता है। भौकता है यानी सलाह-मशविरा देता है, पर कोई सुनता नहीं। दुतकारा जाता है।

२० वर्ष (बीस) २० से अंत तक, उल्लुओं की जिंदगी जीता है। अंधेर में घिरा रहता है, आंखों से दिखना कम हो जाता है और शरीर भयावह हो जाता है। किसी को परवाह नहीं रहती, कहीं कोने में दुबका पड़ा रहता है।

अपवाद हर कहीं होते हैं, लेकिन वास्तविकता यही है।

अविनाश दवे,
गाजियाबाद

चंद्रराशि पर आधारित संतोष व्यास 'देवज्ञ'

मई माह का भविष्यफल

ज्योतिष शास्त्रानुसार मनुष्य को होने वाले दुःख, दर्द, रोग, दोष उसके पूर्व जन्मकृत अशुभ कर्मों के फलस्वरूप प्रकट होते हैं

मेष- इस मास में शारीरिक सुख में बाधा उत्पन्न हो सकती है, संतान सुख में,स्त्री सुख में पूर्ण रूप से सुधार संभव हो, किसी नवीन कार्य का विचार बने, माता पिता के स्वास्थ्य में गिरावट, यात्रा का आकस्मिक योग बन सकता है। जिससे अच्छी धन की प्राप्ति हो सकती है।

वृषभ- इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्त्री उदर विकार से त्रस्त रहेगी, भोजन व्यवस्था ठीक नहीं रह सकती, संतान में मतभेद के कारण मन खिन्न रह सकता है, आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार, बाह्य यात्रा में अच्छा लाभ मिलेगा, बंधुजनों से मतभेद एवं विरोधाभास होगा।

मिथुन- इस माह में आपको अर्थलाभ यथा समय होगा। सामाजिक कार्यों की ओर विशेष ध्यान दिया जा सकता है। परिचित व्यक्ति आपको ठग सकता है। मित्र वर्ग से मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। बंधु वर्ग से विशेष सहयोग मिले, संतान सुख का योग बन रहा है।

कर्क- इस माह में स्वास्थ आपका ठीक नहीं रहेगा, शारीरिक, मानसिक व्यथाएं सताती रहेंगी। पारिवारिक कलह से आपके मन में खिन्नता रहेगी। शत्रु दल का पलड़ा भारी रहेगा। नवीन कार्य के सम्पादन की धुन बनी रह सकती है। धर्म की ओर विशेष रुचि बनी रहेगी।

सिंह- इस माह का फल साधारण है, स्त्री कलह शीघ्र ही समाप्त होगा। रोजीरोटी जुटाने के लिए भरसक प्रयास करेंगे, भ्रातृ वर्ग का विशेष सहयोग मिलेगा। सामाजिक कार्यों में हाथ बंटाने से सम्मान वृद्धि, धन लाभ अच्छा होगा। किसी भद्र पुरुष का मिलन नई दिशा दिखाएगा।

कन्या- इस माह में आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। आर्थिक परेशानियां एकदम से आ सकती हैं। परिवार की कलह से अशांति, मासांत में लाभ अच्छा होगा। जिससे आपके वर्चस्व में वृद्धि होगी। विरोधीजनों के भाव-विचारों में अंतर अवश्य ही आ सकता है।

तुला- इस मास का फल साधारण रहेगा। पड़ोसियों से लड़ाई-झगड़ा उग्र रूप ले सकता है। शांति भाव से भीषण झगड़ा टल सकता है। उद्योग धंधों के लिए कठिन प्रयास होगा। इष्ट मित्रों से विशेष सहयोग मिलेगा। किसी नवीन कार्य को नहीं करें।

वृश्चिक- इस मास में आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। आय-व्यय समान रहेगा। संतान प्राप्ति का विशेष योग बन रहा है। पारिवारिकजनों से मनमुटाव बना रहेगा। विपक्षी दल बुरी तरह पराजित होगा, किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। राज में विशेष सम्मान होगा।

धनु- इस मास में अराजक तत्वों से पूर्ण सावधान रहें। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक चिंताओं का ह्रस होगा। आकस्मिक चोट-चपेट से भारी कष्ट हो सकता है। जायदाद संबंधी मामला शीघ्र ही सुलझेगा। मास के अंत में शांति वातावरण से आपका वर्चस्व बढ़ेगा।

मकर- इस मास में आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। स्त्री को शारीरिक कष्ट से विशेष परेशानी, शत्रु दल प्रभुत्व एकदम नष्ट होगा। आप किसी नवीन कार्य का विचार छोड़ देवें। सामाजिक अपकीर्ति से विशेष सावधान रहें। लंबी यात्रा का योग आकस्मिक बन रहा है।

कुंभ- इस मास में आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। अनेक प्रकार के कष्ट सामने आ सकते हैं। धन लाभ भी यथा संभव होता रहेगा। मानसिक चिंताओं का शीघ्र ही ह्रास होगा। न्यायालय संबंधी कार्यों में रुकावट, माता-पिता की सेवा का अवसर भाइयों से स्नेह बढ़ेगा।

मीन- इस मास में आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। धन लाभ का आकस्मिक योग बन रहा है। घरेलू कार्यों में पैसा अधिक व्यय होगा। स्त्री संतान का सुख उत्तम, मासांत में उदर पीड़ा से विशेष कष्ट, भाइयों से मतभेद होंगे। धर्म कार्यों में विशेष रुचि बढ़ेगी।संतोषकुमार व्यास (देवज्ञ)

लघुकथा

सत्य का प्रेमी पुलिस आफिसर

उस समय वह पुलिस आफिसर बहुत अच्छे मूड में था। वह जब मजाक के मूड में होता था तो खुद अपने और पुलिस साथियों के क्रूर और भ्रष्ट व्यवहार पर भी व्यंग्य करने से नहीं चूकता था। इस समय वह एक रेस्टोरेंट के सामने गुजर रहा था कि जोर से हल्ला मचा। देखा, एक तेरह-चौदह साल का लड़का तीर की तेजी से भागताहुआ निकला और पास ही कहीं अंधेरे में जाकर गुम हो गया। रेस्टोरेंट के मालिक और उसके नौकरों ने उसे इधर-उधर तलाश किया, फिर पुलिस आफिसर को देखा तो मालिक दौड़ता हुआ उसके पास आ पहुंचा। साहब, उसने पचहत्तर रुपए का नाश्ता डकारा है। हरामखोर, बिना पैसे दिए भाग गया। मैं उसकी टांग तोड़ दूंगा, छोड़ूंगा नहीं।

देखता हूं, कहां जाएगा साला। कहतेहुए पुलिस आफिसर ने दो-चार गालियों का श्लोक पाठ किया। रेस्टोरेंट के मालिक को वापस भेज वह उस तरफ तेजी से चल दिया। जिधर लड़के को जाते देखा था। उसे पता था, वहां एक गली थी जो आगे जाकर बंद हो जाती थी। लड़का वहीं कहीं छुपा होगा, उसने सोचा। जल्दी ही उसने लड़के को पकड़ लिया। लड़का घिघियाकर माफी मांगने लगा, साहब मेरे पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं है।

पुलिस आफिसर तब तक मजाक के मजाक के मूड में आ चुका था, उसने कहा, अच्छा छोड़ दूंगा, पर तू तीन ऐसी बातें बता जिनकी सचाई को कोई चैलेंज नहीं कर सके।

लड़का डरा हुआ था, फिर भी उसने खुद को थोड़ा संयत किया और कुछ पल सोचकर बोला, पहला आपने मुझे पकड़ लिया, अब मेरी हालत बहुत दयनीय और नाजुक है। दूसरा मैंने बहुत बड़ी मूर्खता की जो बिना पैसे दिए नाश्ता किया और तीसरे, हर कोई जानताहै कि आज की पुलिस बड़े मगरमच्छ टाइप के अपराधियों से तो सांठगांठ करके रखती है और मेरे जैसी छोटी-मोटी मछलियों पर वर्दी की ताकत आजमाने में गर्व अनुभव करती है। पुलिस आफिसर उसके तीनों सच से संतुष्ट होकर मुस्कराया, ठीक है, जा साले छोड़ता हूं, कहता हुआ ड्यूटी पर चल दिया।

आशा नगर
सी 12/9, ऋषि नगर उज्जैन
फोन - 0734-2521157

घटते संयुक्त परिवार, बढ़ते एकल परिवार और पीछे छूटते जा रहे हैं संस्कार

आधुनिक युग में हमारे बढ़ते कदम निःसंदेह हमें रोमांचित करते हैं। प्रतिवर्ष हम अपने को पहले की अपेक्षा आगे बढ़ा हुआ पाते हैं। चाहे सोच-विचार की बात हो, व्यवहार की अथवा रहन-सहन की। किंतु दुःखद बात यह है कि हम अपने साथ संस्कारों को नहीं ला रहे जो आदर्श जीवन का स्तंभ होते हैं। परिणामस्वरूप, कई प्रकार की त्रुटियां परिवार में घर करती जा रही हैं। संयुक्त परिवार में कई प्रकार के संस्कार स्वतः अनुग्रहित हो जाते हैं। जैसे माता-पिता के साथ बच्चों का व्यवहार, भाई-बंधुओं के साथ आत्मीय सम्मान, प्रातः उठना, कर्मठता इत्यादि। एकल परिवार ने हमारी सोच भी एकल कर दी है।

संयुक्त परिवार में बच्चों का प्रातः उठकर बड़ों के पैर छूना या प्रणाम करना, विनम्रता का बीज बोता है। जिसकी जड़ें बड़े होते-होते इतनी गहरी हो जाती हैं कि हम घर के बाहर भी बड़े बुजुर्गों को वही सम्मान देते हैं, जो परिवार के सदस्यों को देते हैं। इसी प्रकार बोल-चाल के तौर-तरीके उम्र दराज लोगों के साथ कैसे हों, बच्चों को उम्र के अनुसार क्या और कितना बोलना चाहिए इत्यादि बातें भी स्वतः सिखने में आ जाती थीं, क्योंकि संयुक्त परिवार में कई सदस्य होते थे तो अनेकों बातें बगैर सिखाए सिखाने में आ जाती थीं। किंतु आज छोटी-छोटी बातें भी बच्चों को एक विषम रूप में माता-पिता को सिखाना पड़ता है।

एक तो पढ़ाई की जिम्मेदारी और घर बाहर के काम को बखूबी निभाने की जिम्मेदारी के साथ एकल परिवार में महिलाओं की चुनौतियां बढ़ गई हैं। कई परिवारों में जहां पुरुष परिवार की जिम्मेदारियों की साझेदारी निभाते हैं, वहीं तो चुनौतियां इतनी कठिन नहीं होती, किंतु जहां परिवार की सारी चुनौती का भार महिलाओं पर हो और महिला सजग है तो परिवार बन जाते हैं और जहां महिला सशक्त नहीं और पुरुष अपने को घर का साझेदार नहीं मानते वहां विसंगतियां उत्पन्न हो जाती हैं।

यहां मैं जरूर अपनी नागर बहनों से कहूंगी कि नारी अक्षुण्णु शक्ति का भंडार है। त्याग और समर्पण हमारे गहने हैं। इनसे अपने परिवार को अलंकृत कर परिवार को सही दिशा में ले जाया जा सकता है- ना कि निरीह बनकर यह कहना कि मैं क्या करूं? हम जितने लचिले हो सकते हैं उतने पुरुष नहीं। हमारी पहचान पहले हमारा परिवार है, फिर सामाजिक छवि।

चरणस्पर्श संस्कार का अभिन्न पहलू है। जिसका स्वरूप भी आधुनिकता के युग में हम भूलते जा रहे हैं। पहले ससम्मान झुककर दोनों हाथों से चरण स्पर्श करते थे। जब कभी भी हमारे से बड़े मिलें पहले चरण स्पर्श कर विनम्र हो जाते, पश्चात बातें करते। इससे चरण स्पर्श करने वाले और कराने वाले दोनों में एक-दूसरे के प्रति विनम्रता और प्रेम उपजता है और हम कितने ही मतभेद रखें मनभेद नहीं होता। हम एक-दूसरे से सौहार्दपूर्ण रूप से मिलते हैं। आप यह आजमा भी सकते हैं। विचारों की कटुता भी शनैः शनैः अप्रभावी हो जाती है। किंतु जहां संस्कारों की गुढ़ता समझाई नहीं जाती या बच्चे आत्मसात करना नहीं चाहते, वहां चरण स्पर्श तो क्या प्रणाम या पहचानना भी मुश्किल हो जाता है और इसी प्रकार सगे संबंधि दूर हो जाते हैं। परिवार के ये छोटे-छोटे संस्कार बड़े स्तंभ के समान होते हैं, जो समय-समय पर हमें हमारे सगे संबंधियों से हमारे रिश्तों की गहराई और निकटता को प्रदर्शित करते हैं। अतः आज के युग में इसके महत्व को पहचानना जरूरी है।

मुझे एक वाक्य याद आता है- मेरी सासू मां (काकीजी) इन पहलुओं पर विशेष ध्यान देती। एक बार मेरी पुत्री -चांदी तकरीबन 5-6 माह की रही होगी। परिवार में उसकी स्थिति ऐसी थी जैसे मधुमक्खियों में रानी की। हर कोई उसे ले जाता, किंतु कभी वह जाना न चाहे तो हाथ हिलाकर भग कहती। किंतु काकीजी को बुरा लगता और वे टोकती। इस प्रकार प्रस्फुटित होती उसकी यह आदत विलुप्त हो गई। वे सम्मान को बहुत महत्व देती चाहे वो अमीर हो या गरीब। हर किसी को सम्मान देना चाहिए चाहे काम करने वाला ही क्यों न हो। हमारे यहां शाम को उनसे मिलने रोज ही कोई न कोई आता तो मुझे दोनों हाथों से चरण स्पर्श करने का कहती। एक बार रतलाम हम लोग शादी में गए, वहां उनकी मामी (पू. जमनामामी) भी आई। उन्हें दूर से आता देख काकीजी(70 वर्ष) पैर में तकलीफ के बावजूद उठकर उन तक गई और चरणस्पर्श किए (मामीजी 90 वर्ष की थीं) और (पु. जमुना मामी) ने विपरीत में उनके चरण स्पर्श किए, क्योंकि काकीजी उनकी भांजी थी। वे दोनों वृद्ध और हम साक्षी थे।

आजकल बच्चों में पूजा करने की नियमित प्रवृत्ति भी देखने को नहीं मिलती। पहले हम उठते ही देवदर्शन पश्चात ही अन्य कुछ करते। आजकल बच्चे टी.वी. दर्शन पहले करते हैं। हमारे यहां कोलकाता में प्रतिदिन पाठ करना, भगवान से मुखातिब होना और पश्चात भोजन करने की परम्परा भी अच्छी है। घर में अन्य को देखते-देखते हम लोगों की भी आदत बन गई। अतः प्रातः उठना और स्नानक्रिया से भी जल्दी ही निवृत्त हो जाते हैं। पाठ से एकाग्रता, ईश्वर में आस्था और आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

किंतु आज की पीढ़ी में एकाग्रता विकसित करने के लिए मेडिटेशन की सलाह देते हैं, भाई बात आधुनिकीकरण की है, जबकिपूजा से यह स्वतः पैदा हो जाती है। आज दिखावे और प्रपंच से इन चीजों में हासिल करने का प्रयास किया जाता है, जो पारिवारिक परिवेश में आसानी से सीखा जा सकता है। वास्तव में तो हमारी संस्कृति का सही अनुकरण करके ही हम इसे पा सकते हैं। आज स्थिति ऐसी है कि जैसे कस्तुरी के लिए हिरण वन-वन भटकता है, और वह उसी के अंदर होती है। हमारी संस्कृति आदर्श जीवन की स्वरूपता प्रदान करने में काफी सक्षम है, पर संस्कारों को आधुनिक जीवन में लाना अपने को असभ्य महसूस करना है। इसी कारण विकास के बढ़ते कदम के साथ हम इसे बौना करते जा रहे हैं। जबकि संस्कारों को भी साथ ले चलें तो हम सुसभ्य आधुनिक जीवन मुखरित करेंगे और अनेकों परेशानियों को दूर कर सकते हैं।

निशी मंडलोई
राष्ट्रकवि रसखान वार्ड, खंडवा
फोन 0733-2224604